04 - मौन का महत्व और आत्मिक शांति का पर्व

05 - वेदों में समाया है शिल्प और रहस्यमय कृतियों का संसार

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 18 जनवरी, 2026

06 - उद्योगों द्वारा क्षेत्र के जरूरतमंदों की मदद सराहनीय-अपर

07 - जो नफरत से भरा, वो दर्शकों का प्यारा

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 138, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुबह का आलम

फोटो-ऋतुराज बुड़ावनवाला

पत्थरदिल सरकार की बंगाल से विदाई जरूरी

● पीएम बोले-बंगाल में घुसपैठियों को वोटर बना रही टीएमसी

टीएमसी सरकार को चेतावनी, भाजपा इन्हें देश से निकालेगी

कोलकाता/गुवाहाटी (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मालदा में शनिवार को पीएम मोदी ने कहा कि बंगाल के सामने एक बड़ी चुनौती घुसपैठ की है। बंगाल के कई इलाकों में आबादी का संतुलन बिगड़ रहा है। टीएमसी घुसपैठियों को वोटर बना रही। गरीबों का हक छीना जा रहा है। भाजपा सरकार बनते ही घुसैपठियों पर एक्शन लिया जाएगा। आयुष्मान भारत योजना पर बात करते हुए पीएम ने कहा कि टीएमसी वालों को आपकी तकलीफ की कोई चिंता नहीं है। यहां आयुष्मान योजना लागू नहीं होने दी गई है। ऐसी पत्थर दिल सरकार की बंगाल से विदाई जरूरी है। पीएम ने मालदा में भारत की पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का उद्घाटन किया। यह ट्रेन हावड़ा से गुवाहाटी के बीच चलेगी। उन्होंने ट्रेन के ड्राइवर से मुलाकात और उसके बारे में जाना। पीएम ने ट्रेन में मौजूद बच्चों से भी बात की।

बंगाल के सामने एक बड़ी चुनौती घुसपैठ की है

आप देखिए दुनिया के जो विकसित देश हैं, समृद्ध देश हैं, जिन्हें पैसों की कमी नहीं, वे भी घुसपैठियों को निकाल रहे हैं। प. बंगाल में भी घुसपैठियों को बाहर करना जरूरी है। एक एक घुसपैठिए को निकालना जरूरी है। टीएमसी के रहते ये संभव नहीं है। ये जमीन-हक, बहन-बेटियों की रक्षा नहीं करेंगे। इन्हें सत्ता से बाहर निकालना चाहिए। मैं मालदा की बाढ़ राहत की कैग रिपोर्ट देख रहा था। टीएमसी के चहेतों के खातों में 40-40 बार बाढ़ राहत का पैसा भेजा गया। जो इसके हकदार नहीं थे, उन्हें लाखों रुपए दिया गया। जिन पर संकट आया उन्हें कुछ नहीं मिला।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री परिसर का निरीक्षण

गैस पीड़ितों के साथ हर कदम पर खड़ी है सरकार: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 2 और 3 दिसम्बर 1984 की दरमियानी रात भोपाल में मिथाइल आइसोसायनाइट (एमआईसी) गैस का रिसाव एक भीषण दुर्घटना थी। घटना में बड़ी संख्या में लोग हताहत हुए। करीब 40 साल तक रासायनिक कचरा यहां पड़ा रहा। हमारी सरकार ने माननीय उच्च न्यायालय के मार्गदर्शन में बिना किसी पर्यावरण नुकसान और मानव हानि के यहां के रासायनिक कचरे का सफलतापूर्वक निष्पादन करवाया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अब हम समाज के सभी वर्गों एवं प्रभावित पक्षों को विश्वास में लेकर यूनियन कार्बाइड परिसर का विकास करेंगे और माननीय उच्च न्यायालय के मार्गदर्शन में अब स्वच्छ हो चुके इस परिसर में भोपाल गैस त्रासदी में दिवंगत व्यक्तियों की स्मृति में एक स्मारक% बनाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार सभी गैस पीड़ितों के साथ हर कदम पर खड़ी है। प्रभावितों के कल्याण में हम कोई कमी नहीं रखेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को भोपाल के आरिफ नगर स्थित यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री परिसर का गहनता से निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास विभाग के अधिकारियों से इस परिसर में स्मारक निर्माण के संबंध में जानकारी ली। इस दौरान सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय श्री आलोक कुमार सिंह, आयुक्त जनसम्पर्क श्री दीपक कुमार सक्सेना, संचालक गैस राहत श्री स्वतंत्र कुमार सिंह, निगमायुक्त श्रीमती संस्कृति जैन और गैस त्रासदी राहत विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

फैक्ट्री परिसर के समुचित विकास के लिए करेंगे सभी जरूरी प्रबंध

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड फैक्ट्री परिसर में पड़े रासायनिक कचरे का माननीय उच्च न्यायालय के मार्गदर्शन में समुचित निष्पादन किया जा चुका है। अब हम भोपाल मेट्रोपोलिटन एरिया के निर्माण के साथ इस परिसर के भी समुचित विकास के लिए सभी जरूरी प्रबंध कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मध्यप्रदेश के पहले ऐसे मुख्यमंत्री हैं, जो यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री परिसर में बिना किसी सेफ्टी मास्क के गए और फैक्ट्री के कोर एरिया का बारीकी से मुआयना किया। निरीक्षण के बाद मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मीडिया से चर्चा में कहा कि भोपाल स्थित यूनियन कार्बाइड कारखाने से जहरीली गैस का रिसाव मध्यप्रदेश की ही नहीं, देश की सबसे भीषण गैस त्रासदी थी। वर्ष 1984 में 2 और 3 दिसंबर की रात इस फैक्ट्री से गैस के दुष्प्रभाव के कारण भोपाल ने मौत का जो मंज़र देखा, वह हमारी स्मृतियों से कभी हटेगा नहीं। गैस त्रासदी के बाद तत्कालीन सरकार ने इस क्षेत्र को लावारिस छोड़कर बड़ी लापरवाही की। उन्होंने फैक्ट्री में फैले जहरीले कचरे को हटाने के लिए कोई निर्णय नहीं लिया और इस भीषण त्रासदी के बाद फैक्ट्री को बंद कर दिया गया। तत्कालीन सरकार के जिम्मेदारों ने फैक्ट्री के मालिक वॉरेन एंडरसन को यहां से भाग जाने में मदद की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केंद्र में यूपीए सरकार रहते हुए भी इस गैस प्रभावित क्षेत्र के विकास के लिए कुछ नहीं किया गया।

सुप्रभात

झूठ से, सच से, जिससे भी यारी रखें
आप तो अपनी तक़रीर जारी रखें

बात मन की कहें या वतन की कहें
झूठ बोलें तो आवाज़ भारी रखें

इन दिनों आप मालिक हैं बाज़ार के
जो भी चाहें वो क़ीमत हमारी रखें

आपके पास चोरों की फ़ेहरिस्त है
सब पे दस्त-ए-करम बारी बारी रखें

सैर के वास्ते और भी मुल्क हैं
रोज़ तैयार अपनी सवारी रखें

वो मुक़म्मल भी हो ये ज़रूरी नहीं
योजनाएं मगर ढ़ेर सारी रखें

- राहत इंदौरी

29 नगर निगमों में 17 पर अकेले बीजेपी का कब्जा

● महाराष्ट्र नगर निगम चुनाव में बीजेपी ने दर्ज की एकतरफा जीत ● राउत बोले-शिंदे जयचंद नहीं बनते तो मुंबई कभी नहीं जीतती बीजेपी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र नगर निगम चुनाव में बीजेपी ने एकतरफा जीत दर्ज की। कुल 29 नगर निगमों में से 17 पर अकेले भाजपा का कब्जा हो गया है। यानी इन निगमों में मेयर बनाने जा रही है। वहीं, उसके नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन ने 8 निगमों में जीत हासिल की। इस तरह भाजपा गठबंधन को 25 नगर निगमों में जीत दर्ज हुई है। भाजपा-शिवसेना (शिंदे) के गठबंधन ने उद्धव ठाकरे से बीएमसी छीनकर, उनका तीन दशक पुराना दबदबा खत्म कर दिया है। बीएमसी में भाजपा 89 जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनी है। राज्य चुनाव आयोग की तरफ से घोषित फाइनल रिजल्ट के मुताबिक बीजेपी+ ने 29 नगर निगमों में 2,869 सीटों में से 1,425 सीटें जीती हैं।

पानी पीकर लोग मर रहे, यही अर्बन मॉडल

● राहुल गांधी बोले-एमपी की बीजेपी सरकार जिम्मेदारी ले ● इंदौर में मृतकों के परिजन को डेढ़-डेढ़ लाख के चेक दिए

इंदौर। कांग्रेस राहुल गांधी शनिवार को इंदौर पहुंचे। राहुल सबसे पहले बॉम्बे हॉस्पिटल गए,जहां उन्होंने दूषित पानी से पीड़ित मरीजों और परिजन से मुलाकात की। राहुल ने कहा ये नए मॉडल की स्मार्ट सिटी है। पीने का पानी नहीं है। परिवार पानी पीने के बाद बीमार हुए। यानी इंदौर में साफ पानी नहीं मिल सकता है। ये है अर्बन मॉडल। उन्होंने कहा, सरकार अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रही है। किसी को ये राजनीति लगे तो लगे, लेकिन लोगों को साफ पानी मिलना चाहिए।

इस दौरान राहुल भागीरथपुरा भी गए और दूषित पानी से जान गंवाने वाली गीता बाई और जीवनलाल के परिवार से मिले। दोनों परिवारों को उन्होंने चेक दिया। इसके बाद राहुल गांधी संस्कार गार्डन पहुंचे। यहां उन्होंने दूसरे प्रभावितों से मुलाकात की। सभी को राहुल ने एक लाख और सिंघार ने 50-50 हजार रुपए के चेक दिए। इस दौरान राहुल के साथ पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह, प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और अजय सिंह भी रहे। दरअसल, इंदौर के भागीरथपुरा में दूषित पानी से 24 मौतें हुई है।

भागीरथपुरा में मृतकों के परिजन से मिलने के बाद राहुल ने कहा इनके परिवार में लोगों की डेथ हुई है। लोग बीमार हुए हैं। ये कहा जाता था कि देश को स्मार्ट सिटी दी जाएंगी। ये नए मॉडल की स्मार्ट सिटी है। पीने का पानी नहीं है।

लोगों को डराया जा रहा है। सारे के सारे परिवार पानी पीने के बाद बीमार हुए। यानी इंदौर में साफ पानी नहीं मिल सकता है। पानी पीकर लोग मरते हैं।

ये है अर्बन मॉडल। राहुल ने कहा ये सिर्फ इंदौर में नहीं है। अलग-अलग शहरों में यही हो रहा है। सरकार अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रही है।

सरकार में कोई तो जिम्मेदार होगा, जिसने यहां ये काम करवाया है। कोई तो जिम्मेदारी सरकार को लेनी चाहिए। लोगों ने जो इलाज कराया है, मौतें हुई हैं उसके लिए सरकार को मुआवजा तो देना चाहिए।

रहवासियों ने बताया- साफ पानी नहीं मिल रहा

राहुल बोले कि उनको रहवासियों ने बताया कि ये जो टंकी है ये सिंबल है। आज भी साफ पानी नहीं मिल रहा है। बैन लगा दिया है, लेकिन कुछ दिन में हटा दिया जाएगा और फिर वही पानी दिया जाएगा। लोग कह रहे हैं जो सरकार की जिम्मेदारी है उसे पूरा करे। आप यहां राजनीति करने आए हैं। इस सवाल के जवाब में राहुल ने कहा मैं उनको सपोर्ट करने यहां आया हूं। मैं विपक्ष का नेता हूं। यहां उनका मुद्दा उठाने उनकी मदद करने आया हूं। इसमें कोई गलत काम नहीं है। मेरी जिम्मेदारी बनती है कि हमारी देश में लोगों को साफ पानी नहीं मिल रहा है तो मदद करूं। मैं इनके साथ खड़ा हूं। आप इनको साफ पानी दिलवाइए।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 20°c
सुबह सवेरे
भोपाल ■ रविवार, 18 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

कांग्रेस विधायक का बयान समाज को बांटने वाला व लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है: सीएम यादव

बरैया के बयान पर सोनिया व प्रियंका की चुप्पी कांग्रेस की कथनी और करनी में फर्क उजागर करती है : हेमंत खण्डेलवाल

भोपाल। कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया के महिलाओं को लेकर दिए दूषित बयान पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं पार्टी की वरिष्ठ नेत्रियों ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कडी आलोचना की है। इंदौर, भोपाल एवं जबलपुर सहित पूरे प्रदेश में भाजपा महिला मोर्चा कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी एवं कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर बरैया से सार्वजनिक माफी एवं कांग्रेस से निष्कासन की मांग की।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया ने समाज में जहर घोलने वाला बयान दिया है। विधायक बरैया का यह बयान कांग्रेस पार्टी की महिला और दलित विरोधी सोच को उजागर करता है। बरैया ने अपने बयान से सामाजिक विद्वेष फैलाने का काम किया है, जो किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं है। राहुल गांधी ने इंदौर में विधायक फूल सिंह बरैया के साथ मंच साझा किया। राहुल गांधी का यह कदम क्या बरैया के बयानों को

मौन सहमति व स्वीकारोक्ति मानी जाए? राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी विधायक बरैया पर कार्रवाई करते हुए पार्टी से बाहर निकालें। बरैया के खिलाफ राहुल गांधी कोई कार्रवाई नहीं करते तो यह माना जाएगा कि अन्य समाजों को लेकर उनके मन में कोई सम्मान नहीं है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि महिलाओं को लेकर शर्मनाक बयान देने वाले कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया के साथ राहुल गांधी ने मंच साझा कर कांग्रेस की महिला विरोधी मानसिकता प्रदर्शित की है। बरैया का बयान कांग्रेस की विचारधारा और मातृशक्ति के प्रति निम्न स्तरीय संस्कार का प्रतिबिंब है। सोनिया व प्रियंका की चुप्पी कांग्रेस की कथनी और करनी उजागर करती है।

कांग्रेस पार्टी स्पष्ट करे कि वह बरैया के बयान से सहमत है या नहीं- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया का बयान समाज में जहर घोलने वाला है। सामाजिक विद्वेष फैलाने वाला बयान देने वाले कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया को राहुल गांधी तुरंत पार्टी से बाहर करें। राहुल गांधी मध्यप्रदेश में विधायक फूल सिंह बरैया के साथ मंच साझा करते हैं। उन्हें स्पष्ट करना चाहिए कि क्या कांग्रेस पार्टी ऐसे बयान देने वाले नेताओं के साथ खड़ी है ? यदि कांग्रेस वास्तव में सामाजिक सद्भाव, समानता और सम्मान में विश्वास करती है, तो उसे यह स्पष्ट करना होगा कि फूलसिंह बरैया के बयान को लेकर क्या विचार है? केवल बयान देना पर्याप्त नहीं, बल्कि ठोस कार्रवाई आवश्यक है। उन्होंने कहा कि मैं फूलसिंह बरैया के इस बयान की कड़ी निंदा करता हूं। इस प्रकार की भाषा और सोच समाज को बांटने वाली है और लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है। ऐसे लोगों को सार्वजनिक जीवन में रहने का कोई अधिकार नहीं है। भारतीय जनता पार्टी समाज को जोड़ने, सम्मान और समरसता की राजनीति में विश्वास करती है, जबकि कांग्रेस बार-बार ऐसे बयानों के माध्यम से समाज में तनाव और विभाजन पैदा करने का काम करती रही है।

कांग्रेस विधायक का बयान समाज को आपस में लड़ाने वाला है – निर्मला भूरिया

मध्यप्रदेश शासन की मंत्री निर्मला भूरिया ने कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया के बयान पर कहा कि भाजपा सरकार और हमारी पार्टी के नेता महिला सशक्तिकरण, सम्मान और सुरक्षा के लिए निरंतर हर संभव प्रयास कर रहे हैं। इसके विपरीत कांग्रेस के कुछ नेता और विधायक फूल सिंह बरैया जैसे लोग महिलाओं को लेकर शर्मनाक और विवादित बयान दे रहे हैं। मैं ऐसे बयानों की घोर भर्त्सना और कड़ी निंदा करती हूं। फूल सिंह बरैया का बयान न केवल सभी समाज की महिलाओं का अपमान है।

महिलाओं के खिलाफ अपराध पर ऐसी घिनौनी टिप्पणी अस्वीकार्य : अर्चना चिटनिस

भाजपा की प्रदेश प्रवक्ता व पूर्व मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस ने कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया के बयान को अत्यंत शर्मनाक बताते हुए कहा कि कोई जनप्रतिनिधि महिलाओं के साथ हो रहे अपराध और बलात्कार जैसे जघन्य विषय पर इतनी घिनौनी टिप्पणी कर सकता है। कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया एक जनप्रतिनिधि हैं। उनकी सोच महिला विरोधी और समाज को तोड़ने वाली है। कांग्रेस नेत्री प्रियंका गांधी लड़की हूं, लड़ सकती हूं का नारा देती हैं। यदि कांग्रेस वास्तव में इस नारे पर विश्वास करती है, तो प्रियंका गांधी को सबसे पहले फूल सिंह बरैया के खिलाफ लड़ना चाहिए।

अंतिम यात्रा के लिए आए रिश्तेदार, जन्मदिन मनाकर लौटे

● नागपुर में शव यात्रा से पहले 103 साल की दादी जिंदा हुई

नागपुर (एजेंसी)। महाराष्ट्र के नागपुर में एक चौकाने वाली घटना हुई। 103 साल की महिला को मृत समझकर परिजनों ने अंतिम संस्कार की तैयारी कर ली, लेकिन शव यात्रा से पहले उनकी सांस चलने लगी। परिजनों ने 12 जनवरी की शाम महिला को मृत मान लिया गया था। 13 जनवरी की सुबह अंतिम यात्रा तय थी, लेकिन करीब दो घंटे बाद परिजनों को उनके शरीर में हलचल दिखी। यह मामला नागपुर जिले के रामटेक शहर के

आंबेडकर वार्ड का है। यहां रहने वाली 103 साल की गंगाबाई सावजी साखरे पिछले करीब दो महीनों से बिस्तर पर थीं। घर वालों ने मृत समझकर परंपरा के अनुसार गंगाबाई को नए कपड़े पहनाए। उनके हाथ-पैरों के अंगूठे बांधे गए और नाक में रुई रखी गई। रिश्तेदारों और परिचितों को उनके निधन की सूचना दी गई। परिजनों ने सोशल मीडिया पर भी उनके निधन की खबर साझा कर दी। घर के सामने मंडप लगाया गया, कुर्सियां मंगवाई गईं और शव वाहन बुक किया गया। 13 जनवरी सुबह 10 बजे अंतिम यात्रा का समय तय किया गया।

ईरान से लौटे भारतीय दिल्ली एयरपोर्ट पर फूट-फूटकर रोए

● कहा-वहां इंटरनेट नहीं, हालात बदतर, हिंसा में 3 हजार मौतें

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान में हिंसा के बीच वहां फंसे कई भारतीय नागरिक शुक्रवार देर रात दिल्ली एयरपोर्ट पहुंचे। इनमें ज्यादातर स्टूडेंट्स हैं। इनमें कुछ भारत सरकार के पहल से भारत लौटे, तो कुछ निजी फ्लाइट्स से अपने खर्च पर वापस आए। दिल्ली एयरपोर्ट पर अपने परिवार से गले लगकर कई भारतीय नागरिक फूट-फूटकर रोने लगे। उन्होंने बताया कि हिंसा के दौरान वे किस परिस्थितियों में ईरान में फंसे थे। ईरान से लौटे

जम्मू-कश्मीर के एक युवक ने कहा- वहां हालात बहुत खराब हैं। खतरनाक विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं। ईरान से लौटी मेडिकल स्टूडेंट अर्श दहरा ने बताया कि भारतीय दूतावास ने उनसे संपर्क किया था, लेकिन वह एक निजी फ्लाइट से खुद दिल्ली आई हैं। एक अन्य युवक ने कहा- हम वहां एक महीने तक फंसे रहे। एक-दो हफ्तों से ज्यादा परेशानी होने लगी। घर से बाहर निकलते, तो प्रदर्शनकारी गाड़ी के सामने आ जाते थे। ईरान में वहां की करेंसी 'रियाल' के ऐतिहासिक रूप से नीचे गिरने और महंगाई के विरोध में 28 दिसंबर 2025 में प्रदर्शन शुरू हुए थे। देश के सभी 31 प्रांतों में हिंसा फैल गई है। इसमें 3 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हुई है।

अरुणाचल में जमी हुई झील में फिसलकर दो युवक डूबे

● शव मिले, दोनों केरल के थे, लेक के ऊपर बर्फ की परत टूटने से हादसा

ईटानगर (एजेंसी)। अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले में स्थित सेला लेक में शुक्रवार को केरल के दो युवक डूब गए। एक पर्यटक का शव शुक्रवार को ही बरामद कर लिया गया, जबकि दूसरे का शव शनिवार को बरामद हुआ। पानी के भीतर कम विजिबिलिटी के कारण गोताखोरों को शव ढूंढ़ने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। पुलिस अधीक्षक डी.डब्ल्यू. थोंगोन ने

बताया कि मृतकों की पहचान दिनु (26) और महादेव (24) के रूप में हुई है। दोनों सात लोगों के टूरिस्ट ग्रुप का हिस्सा थे, जो असम गुवाहाटी के रास्ते अरुणाचल के तवांग में घूमने पहुंचा था। घटना कल दोपहर में हुई, जब युवकों का ग्रुप जमी हुई झील के ऊपर मौज-मस्ती कर रहा था। इसी दौरान बर्फ की परत टूट गई और एक युवक पानी में गिर गया। उसे बचाने के लिए दिनु और महादेव झील में उतरे। जो युवक पहले गिर था, वह सुरक्षित बाहर आ गया, लेकिन दिनु और महादेव बर्फीले पानी में बह गए। स्क्कथोंगोन ने बताया कि प्रशासन को करीब 3 बजे सूचना मिली, जिसके बाद जिला पुलिस, आर्मी, राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल और एनडीआरएफ की संयुक्त टीम ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान के प्रयासों से विदिशा क्षेत्र को सड़क विकास की मेगा सौगात

केंद्रीय मंत्री श्री गडकरी ने माना शिवराज का विज़न

विदिशा/भोपाल। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के विशेष प्रयासों से विदिशा संसदीय क्षेत्र और आसपास के जिलों को आज सड़क विकास की ऐतिहासिक सौगात मिली। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने विदिशा में लगभग 4,400 करोड़ रुपए की 8 राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का भूमिपूजन एवं लोकार्पण किया, साथ ही लगभग 450 करोड़ रु. के विकास कार्यों का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की गरिमामयी उपस्थिति रही।

विदिशा के लिए 4,400 करोड़ की सड़क परियोजनाएँ- कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री श्री गडकरी, श्री शिवराज सिंह और मुख्यमंत्री की उपस्थिति में रायसेन-विदिशा राष्ट्रीय राजमार्ग, विदिशा-ग्यारसपुर, ग्यारसपुर-राहतगढ़ और राहतगढ़ से सागर तक राष्ट्रीय राजमार्ग के निर्माण एवं चौड़ीकरण कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण किया गया। इटारसी-बुधनी-बरखेड़ा-ओबेदुल्लागंज मार्ग, जो रातापानी अभयारण्य के बीच से गुजरने वाला शानदार राष्ट्रीय राजमार्ग है, उसका भी लोकार्पण किया गया, जिससे पूरे क्षेत्र की कनेक्टिविटी को नई गति मिलेगी।

शिवराज सिंह चौहान की पहल पर स्वीकृत नई बड़ी घोषणाएँ- नितिन गडकरी ने मंच से घोषणा की कि विदिशा-सागर-कोटा ग्रीनफील्ड एक्सप्रेस-वे लगभग 16,000 करोड़ रु. की लागत से मंजूर हो चुका है, जिससे करीब 75 किलोमीटर दूरी कम होगी और यह दिल्ली-मुंबई तथा भोपाल-कानपुर जैसे बड़े एक्सप्रेस-वे से जुड़कर नए आर्थिक गलियारे का काम करेगा। शिवराज सिंह चौहान की मांग पर नसरुल्लागंज-रेहटी-बुधनी रोड और गोपालपुर-भेरुंदा रोड को चार लेन और सीमेंट कंक्रीट से विकसित करने को मंजूरी दी गई, जिससे विदिशा संसदीय क्षेत्र और नर्मदापुरम-सीहोर बेल्ट में आवागमन और व्यापार को बड़ा लाभ होगा। केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि इस राशि से गांव-गांव तक मजबूत सड़क नेटवर्क बनाया जाएगा, जिससे किसानों की उपज, उद्योग और पर्यटन सभी को सीधा लाभ पहुँचेगा।

विकास की भूख कभी खत्म नहीं होती, शिवराज ने गडकरी के प्रति जताया आभार- श्री चौहान ने कहा, आज आपने 4,400 करोड़ रु . की सौगातें दी हैं, इसके लिए हृदय से अभिनंदन, लेकिन विकास की भूख कभी पूरी नहीं होती, और विदिशा-रायसेन-सीहोर-खातेगांव-इछावर सहित पूरे संसदीय क्षेत्र के लिए आगे भी नई परियोजनाएँ स्वीकृत करने का अनुरोध किया। उन्होंने नितिन गडकरी को असंभव को संभव करने वाले, विकास और सड़क क्रांति के जनक बताते हुए कहा कि विदिशा, रायसेन, सीहोर और खातेगांव की जनता उनकी इस उदार सौगात के लिए हृदय से आभारी है।

विनोद नागर नासिक में साहित्य विभूति सम्मान से सम्मानित

भोपाल। राजधानी के वरिष्ठ लेखक, पत्रकार, समीक्षक और स्तंभकार विनोद नागर को हाल ही में महाराष्ट्र के नासिक शहर में 'विद्योत्तमा साहित्य विभूति' सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें विद्योत्तमा फाउंडेशन द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मान समारोह में प्रदान किया गया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार एवं दैनिक भास्कर समाचार पत्र के समूह संपादक राजेश दुबे ने की। केंद्रीय संस्कृत

विश्व विद्यालय, नासिक के निदेशक डॉ. नीलाभ तिवारी समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि सीएसआर (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी) के बाद अब देश में पर्सनल सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (पीएसआर) की नई अवधारणा पर गंभीरता पूर्वक विचार करने का समय आ गया है। समारोह में विद्योत्तमा फाउंडेशन के अध्यक्ष सुबोध कुमार मिश्र ने बताया कि इस वर्ष देश के विभिन्न भागों से आये 31 साहित्यकारों को उनकी श्रेष्ठ कृतियों के लिये सम्मानित किया गया है। मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के नरेश मेहता सम्मान से विभूषित नागर को 'साहित्य विभूति' सम्मान उनकी पुस्तक 'लिखा तो छपा' के लिये दिया गया है।

हिमाचल कांग्रेस में राज्यसभा चुनाव से पहले जमकर घमासान

● नेताओं में असंतोष, 'ऑपरेशन लोटस-2' की चर्चाएं तेज

बीजेपी सांसद अनुराग बोले-कुछ बड़ा होने का है संकेत

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल की सत्तारूढ़ कांग्रेस में राज्यसभा चुनाव से पहले फरवरी 2024 जैसा असंतोष नजर आ रहा है। मंत्री विक्रमादित्य सिंह के बयान के बाद सुक्खू कैबिनेट दो-फाड़ दिख रही है। मंत्री बारी-बारी एक दूसरे पर तीखे जुबानी हमले बोल रहे हैं। बीजेपी इस फूट का फायदा उठाने की तैयारी में है। सियासी गलियारों में 'ऑपरेशन लोटस-2' की चर्चाएं तेज हो गई हैं। इन चर्चाओं को बीजेपी सांसद अनुराग ठाकुर के बयान ने हवा दे दी है। दिशा कमेटी की मीटिंग में आज सुबह ऊना पहुंचे अनुराग ठाकुर ने कहा- जिस तरह मंत्री लड़ रहे हैं, वह बड़ा होने का इशारा है। उन्होंने कहा- कांग्रेस का कुनबा कभी भी इस तरह नहीं बिखरा, जैसा अभी लग रहा है। बता दें कि राज्यसभा सांसद इंदू गोस्वामी का 6 साल का कार्यकाल 10 अप्रैल को पूरा हो रहा है। लिहाजा इससे पहले राज्यसभा चुनाव प्रस्तावित है। मगर कांग्रेस सरकार में 2024 जैसी गुटबाजी खुलकर सामने आ गई है। वजह, विक्रमादित्य सिंह का यूपी-बिहार के अफसरों के शासक बनने को लेकर दिया गया बयान बना है। इस बयान के बाद राजस्व मंत्री, पंचायतीराज मंत्री और तकनीकी शिक्षा राजेश धर्माणी ने भी मंत्री विक्रमादित्य पर जुबानी हमले बोले।

कोई देश टैरिफ लगाता रहे, भारत आत्मनिर्भरता के रास्ते पर चलेगा

● संघ चीफ मोहन भागवत बोले-किसी के दबाव में नहीं होगा इंटरनेशनल ट्रेड

कहा-कुछ देश ग्लोबलाइजेशन को सिर्फ ग्लोबल मार्केट की तरह ही देखते हैं

छत्रपति संभाजीनगर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने लोगों से आत्मनिर्भरता और स्वदेशी (लोकल) सामान के इस्तेमाल करने की अपील करते हुए कहा कि जहां तक हो सके, देश में बना हुआ सामान ही खरीदें। अगर कोई चीज भारत में नहीं बन सकती, तभी उसे बाहर से मंगाना चाहिए। महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में एक हिंदू सम्मेलन में उन्होंने कहा कि भारत इंटरनेशनल ट्रेड कर रहा है, लेकिन किसी देश के दबाव में नहीं हैं। उन्होंने कहा कि चाहे कोई देश टैरिफ लगाए या दबाव बनाए, भारत ने आत्मनिर्भर बनने का रास्ता चुन लिया है और उसी पर चलना चाहिए। भागवत ने कहा कि कुछ देश ग्लोबलाइजेशन को सिर्फ ग्लोबल मार्केट की तरह देखते हैं, लेकिन भारत इसे एक ग्लोबल फैमिली के नजरिए से देखता है। हमें दूसरे देशों में रोजगार पैदा करने की चिंता नहीं करनी चाहिए, यह उनकी जिम्मेदारी है। भागवत ने कहा कि भारत के साथ अगर कुछ अच्छा या बुरा होता है, तो इसके लिए हिंदुओं से सवाल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि भारत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं है, बल्कि एक विचार का नाम है।

आरएसएस चीफ बोले-

हमलों के बावजूद परंपरा जीवित- भागवत ने कहा कि सदियों से हमलों, कठिनाइयों और तबाही के बावजूद भारत की परंपराएं और मूल मूल्य जीवित रहे हैं, जिन्होंने अपने अंदर अच्छे संस्कार, धर्म और मूल्य बचाकर रखे, वही हिंदू कहलाए, और ऐसे लोगों की भूमि को भारत कहा गया। संघ प्रमुख ने कहा कि अगर भारत के लोग अच्छे, ईमानदार और मजबूत चरित्र वाले बनते हैं, तो वही गुण दुनिया के सामने देश की पहचान बनेंगे। आज पूरी दुनिया भारत से उम्मीद करती है और भारत तभी सही मायने में योगदान दे पाएगा, जब वह ताकतवर और प्रभावशाली होगा। ताकत का मतलब सिर्फ हथियार नहीं होता, बल्कि समझ, नैतिकता, ज्ञान और सही सिद्धांत भी ताकत का हिस्सा हैं। हिंदू समाज में एकता सिर्फ संघ का लक्ष्य नहीं है, बल्कि पूरे हिंदू समुदाय की जिम्मेदारी है।

गणतंत्र दिवस की थीम वंदेमातरम, निकलेंगी 30 झांकियां

● भारतीय सेना की नई भैरव बटालियन भी होगी परेड में शामिल ● इस बार राफेल और सुखोई के साथ तेजस नहीं बन पाएगा हिस्सा

नई दिल्ली (एजेंसी)। 26 जनवरी को भारत 77वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है। इस बार मुख्य परेड की थीम वंदेमातरम् पर रखी गई है। परेड के दौरान कर्तव्य पथ पर 30 झांकियां निकलेंगी, जो स्वतंत्रता का मंत्र-वंदे मातरम, समृद्धि का मंत्र-आत्मनिर्भर भारत थीम पर आधारित होंगी। कर्तव्य पथ पर एनक्लोजर के बैकग्राउंड में वंदेमातरम् की लाइन्स वाली पुरानी पेंटिंग बनाई जाएगी। मेन स्टेज पर

फूलों से वंदे मातरम् के रचयिता बंकिम चंद्र चटर्जी को श्रद्धांजलि दी जाएगी। इस

बार गणतंत्र दिवस परेड के मुख्य अतिथि यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन होंगे। परेड में पहली बार बैक्ट्रियन ऊंट, नई बटालियन भैरव भी मार्च पास्ट करेगी। हालांकि इस बार के फ्लाईपास्ट में राफेल, एम-30, अपाचे जैसे 29 विमान शामिल होंगे। हालांकि इस बार तेजस को नहीं रखा गया है। डिफेंस सेक्रेटरी आर के सिंह से तेजस के परेड में न होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि सेना के कुछ बेहतरीन प्लेटफॉर्म दिखाए जा रहे हैं। कुछ शामिल किए गए हैं जबकि कुछ नहीं, लेकिन कोई खास वजह नहीं है। निमंत्रण पत्रों पर वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ का लोगो होगा। परेड खत्म होने पर वंदे मातरम की थीम वाले बैनर के साथ गुब्बारों को हवा में छोड़ा जाएगा। पारंपरिक प्रथा से हटकर, परेड स्थल पर एनक्लोजर के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले और अन्य लेबल का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा।

रिमाउंट एंड वेटरनरी विंग के जानवर परेड में शामिल होंगे

पहली बार सेना की रिमाउंट एंड वेटरनरी विंग के जानवर परेड में शामिल होंगे। इनमें 2 बैक्ट्रियन ऊंट, 4 जास्कर टट्टू, 4 शिकारी पक्षी और 10 मिलिट्री डॉग शामिल हैं। पहली बार भैरव लाइट कमांडो बटालियन भी गणतंत्र दिवस परेड में हिस्सा लेगी। अक्टूबर 2025 में भैरव बटालियन को इन्फैंट्री और स्पेशल फोर्सेज के बीच अंतर को पाटने के लिए बनाया गया था। 29 जनवरी को बीटिंग रिट्रीट सेरेमनी के लिए भी एनक्लोजर का नाम भारतीय वाद्ययंत्रों- बांसुरी, डमरू, एकतारा, एसराज, मृदंगम, नगाड़ा, पखावज, संतूर, सारंगी, सरिंदा, सरोद, शहनाई, सितार, सुरबहार, तबला और वीणा के नाम पर रखा जाएगा। राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से 17 और मंत्रालयों से 13 समेत कुल 30 झांकियां शामिल होंगी।

विदिशा में विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण

मेरे पास द्रौपदी की थाली, किसी को भूखा नहीं रहने देंगे : केंद्रीय मंत्री गडकरी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी और केंद्रीय पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान के साथ विदिशा में विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण किया।

केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि उनके पास द्रौपदी की थाली है और किसी को वे भूखा नहीं रहने देंगे। जो भी उनके पास मांगने के लिए आएगा, उसको खाना देंगे। उन्होंने एमपी की कृषि विकास दर की सराहना करते हुए कहा कि एमपी का गेहूं पूरी दुनिया में जाता है। यहां का बासमती चावल प्रसिद्ध है पर आने वाले समय में किसानों के लिए और काम करने की आवश्यकता है। कृषि मंत्री लगातार प्रयास कर रहे हैं पर पूरे विश्व में किसानों की स्थिति को लेकर अनेक प्रकार के चैलेंज हैं।

केंद्रीय मंत्री गडकरी ने कहा कि स्थिति यह है कि कपास सस्ता है, कपड़ा महंगा है। गेहूं सस्ता है, ब्रेड बिस्किट महंगे हैं। संतरा सस्ता है, जूस महंगा है। सोयाबीन सस्ता है तेल महंगा है।

प्रस्तावित 8 राष्ट्रीय राजमार्गों के लोकार्पण और शिलान्यास

इसके पहले गडकरी ने एमपी को 4400 करोड़ रुपए की सड़कों की सौगात दी। गडकरी ने मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की मौजूदगी में प्रस्तावित 8 राष्ट्रीय राजमार्गों के लोकार्पण और शिलान्यास के लिए विदिशा में यह सौगात दी। मुख्यमंत्री यादव ने कहा कि 181 किलोमीटर लम्बी ये परियोजनाएं मध्य भारत एवं बुंदेलखंड क्षेत्र की सड़क कनेक्टिविटी को मजबूती देंगी। इन सड़क परियोजनाओं से क्षेत्रीय विकास, औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार, आवागमन की सुगमता और आर्थिक प्रगति को नई गति मिलेगी। साथ ही सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देने और कुशल, प्रशिक्षित चालकों की उपलब्धता के लिए 3 आधुनिक ड्राइविंग ट्रेनिंग सेंटर परियोजनाओं का भी शिलान्यास किया गया। ये केंद्र सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने, सुरक्षित ड्राइविंग व्यवहार विकसित करने तथा युवाओं को रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण देने का काम करेंगे।

बेहतर कनेक्टिविटी, कम यात्रा समय और सुरक्षित सड़कें

इन परियोजनाओं के पूर्ण होने से भोपाल-विदिशा-सागर-राहतगढ़-ब्यावरा सहित प्रमुख औद्योगिक, कृषि एवं पर्यटन मार्गों पर यातायात सुगम होगा। फोर-लेन चौड़ीकरण से जहां यात्रा समय में कमी आएगी, वहीं ईंधन की बचत, प्रदूषण में कमी और सड़क सुरक्षा होगी। कई खंडों पर ब्लैक स्पॉट सुधार, अंडरपास तथा ज्यामितीय सुधार किए गए हैं, जिससे दुर्घटनाओं में कमी आएगी।

ड्राइविंग ट्रेनिंग सेंटर : सड़क सुरक्षा की मजबूत नींव

केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय की पहल के चलते विदिशा और सागर जिलों में प्रस्तावित 3 ड्राइविंग ट्रेनिंग सेंटर आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं से युक्त होंगे।

इसलिए लगातार कोशिश करते आया हूं कि किसान अन्नदाता के साथ ऊर्जादाता, ईंधनदाता, डामरदाता (बिटुमिन दाता) बने। गडकरी ने कहा कि आज वे यहां आ रहे थे तो केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव और पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह अपनी मांगें रख रहे थे। ऐसे में मैं सोचता हूं कि मांगें पूरी करते करते मैं समय कैसे दे पाऊंगा पर किसी को चिन्ता करने की बात नहीं है। मेरे पास द्रौपदी की थाली है, खाने के लिए कितने भी लोग आएंगे तो एक भी आदमी भूखा नहीं रहेगा, सबको खाना खिलाने का काम मैं करूंगा, यह वचन मैं आपको देता हूं।

दो बेटियों के पिता और कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया का शर्मनाक बयान पर घिरी कांग्रेस

रेप को बताया 'पुण्य' का काम

'राहुल गांधी से आशा नहीं है, उम्मीद है प्रियंका गांधी एक्शन लेंगी' : भाजपा

भोपाल (नप्र)। भांडेर विधानसभा सीट से विधायक फूल सिंह बरैया ने महिलाओं को लेकर विवादित बयान दिया है। फूलसिंह बरैया के बयान पर बीजेपी नेता संबित पात्रा ने कहा कि प्रियंका गांधी से कार्रवाई की उम्मीद है। बरैया का ताज़ा बयान किसी को भी सन्न कर सकता है। उन्होंने दलित, ओबीसी और आदिवासी महिलाओं को लेकर कहा कि अगर कोई तीर्थ नहीं जा सकता, तो इन महिलाओं का रेप करने पर तीर्थ जैसा फल मिलता है। जब इस पर हंगामा हुआ, तो उन्होंने माफी मांगने के बजाय इसे ग्रंथों की बात बताकर सही ठहराने की कोशिश की। बता दें कि बरैया खुद को खुद को दलितों और पिछड़ों का स्वघोषित मसीहा कहते हैं।

मध्य प्रदेश की भांडेर विधानसभा सीट से कांग्रेस के विधायक फूल सिंह बरैया ने महिलाओं को लेकर विवादित बयान दिया है। फूल सिंह बरैया के बयान के बाद राज्य की सियासत तेज हो गई है। बीजेपी सांसद और प्रवक्ता संबित पात्रा ने फूल सिंह बरैया के बयान को लेकर प्रियंका गांधी से सवाल पूछा है। उन्होंने कहा कि सामाजिक जीवन में किस तरह की भाषा का उपयोग नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि क्या प्रियंका गांधी उनके खिलाफ कार्रवाई करेंगी।

संबित पात्रा ने फूलसिंह बरैया के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह मानवता को शर्मसार करने वाला बयान है। उन्होंने कहा कि यह धर्मग्रंथ को बदनाम करने की साजिश है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी से तो मुझे आशा नहीं है क्योंकि वह नाकाम हैं। लेकिन प्रियंका गांधी जी कहती हैं कि लड़की हूं लड़ सकती हूं। संबित पात्रा ने कहा- मैं शाम इंतजार करता हूं कि प्रियंका गांधी इस पूरे मामले में अपनी टिप्पणी देंगी। वह अपनी माता जी के पास जाएंगी और कहेंगी कि फूलसिंह बरैया को पार्टी से निकाल देना चाहिए।

कांग्रेस का किनारा,पटवारी बोले- स्पष्टीकरण मांगा है, हिंदू संगठनों ने आंदोलन का ऐलान किया

दतिया की भांडेर सीट से कांग्रेस विधायक फूल सिंह बरैया के हालिया बयान को लेकर पार्टी ने कड़ा रुख अपनाया है। कांग्रेस ने स्पष्ट किया है कि महिलाओं के साथ बलात्कार करने वाले अपराधी की कोई जाति या धर्म नहीं होता, वह केवल अपराधी होता है और उसे कानून के तहत सख्त सजा मिलनी चाहिए। कांग्रेस ने एनसीआरबी के आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में प्रतिदिन औसतन 22 बलात्कार की घटनाएं सामने आ रही हैं, जो प्रदेश में कानून-व्यवस्था की गंभीर विफलता को दर्शाता है। पार्टी का कहना है कि ऐसी परिस्थितियों में समाज और हर नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे महिलाओं की सुरक्षा के लिए आगे आएं। पार्टी ने यह भी स्पष्ट किया कि विधायक फूल सिंह बरैया का बयान उनका व्यक्तिगत विचार है। कांग्रेस पार्टी इस तरह के बयानों से सहमत नहीं है। इस मामले में पार्टी की ओर से बरैया से स्पष्टीकरण मांगा गया है।

पचमढ़ी में ट्रेनिंग पर गए पंचायत सचिव का हंगामा, सस्पेंड

भोपाल में 2 पंचायत सचिवों पर कार्रवाई; स्वच्छता पर काम न करना पड़ा भारी

भोपाल (नप्र)। पचमढ़ी में ट्रेनिंग पर गए भोपाल के एक पंचायत सचिव ने हंगामा कर दिया। सचिव ने ट्रेनिंग सेंटर के कर्मचारियों से अभद्रता भी की। जानकारी सामने आने पर जिला पंचायत सीईओ इला तिवारी ने उसे सस्पेंड कर दिया। एक अन्य पंचायत सचिव पर भी निलंबन की गाज गिरी है। जानकारी के अनुसार, सरपंच, सचिव-ग्राम रोजगार सहायक को 15 से 17 जनवरी तक ट्रेनिंग पर भेजा गया था। यह ट्रेनिंग संजय गांधी युवा नेतृत्व एवं प्रशिक्षण केंद्र में हुई। इसमें ग्राम पंचायत चंदूखेड़ी (जनपद फंदा) के सचिव ओमप्रकाश शर्मा भी पहुंचे। 15 जनवरी की रात में सचिव शर्मा ने संस्थान परिसर में हंगामा कर दिया। इसकी शिकायत संस्थान ने जनपद और फिर जिला पंचायत में की। इसके बाद सीईओ तिवारी ने सचिव को निलंबित कर दिया।

डोर-टू-डोर कलेक्शन पर काम नहीं

जिपं सीईओ तिवारी ने फंदा जनपद की ग्राम पंचायत ईंटखेड़ी सड़क के सचिव तिलक सिंह को भी निलंबित किया। सचिव को स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) में डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन, नालियों की सफाई का कार्य किए जाने के लिए बार-बार निर्देशित किया गया था, लेकिन यह काम नहीं किया जा रहा था।

इस संबंध में सचिव को पहले नोटिस जारी किया। बावजूद जवाब पेश नहीं किया। शासन की महत्वपूर्ण योजना में मंशा अनुरूप कार्य न किए जाने और वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों की अवहेलना किए जाने पर सचिव को सस्पेंड कर दिया गया।

आईपीएस सर्विस मीट पर ,डीजीपी मकवाना ने गाया गाना

मैं निकला गड्डी लेके

भोपाल (नप्र)। राजधानी में आयोजित आईपीएस सर्विस मीट का दूसरा दिन था कार्यक्रमों की श्रृंखला में दिनभर इंटरटेनमेंट गेम्स और शाम को मनोरंजन से भरपूर आयोजन रखे गए हैं। प्रदेशभर से आए आईपीएस अधिकारियों और उनके परिवारों में इस मीट को लेकर खासा उत्साह देखने को मिल रहा है।

इससे पहले सर्विस मीट के पहले दिन आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में पुलिस अधिकारियों का अलग ही रंग देखने को मिला। डीजीपी कैलाश मकवाना ने फिल्म गदर का मशहूर गीत मैं निकला गड्डी लेके, रस्ते में यूं सड़क पे एक मोड़ आया, मैं उत्थे दिल छोड़ आया गाकर पुलिस अधिकारियों में जोश भर दिया। वहीं डीजीपी कैलाश मकवाना और पूर्व डीजीपी सुधीर सक्सेना ने अपने परिवार के साथ फिल्म जय हो का गीत गाकर देशभक्ति का माहौल बना दिया। इस दौरान पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा। आईपीएस मीट के दूसरे दिन की शुरुआत इंटरटेनमेंट गेम्स से होगी। लंच के बाद दोपहर में डीजे और म्यूजिक कार्यक्रम आयोजित किया। जाएगा। प्रतिभा सिंह बघेल ने अपनी विशेष संगीत प्रस्तुति दी।

हद हो गई ! इंस्टाग्राम पर बिक रहीं पुलिस की 'डायल 100'

गैंगस्टर के वीडियो से पुलिस महकमे में मचा हड़कंप

जबलपुर (नप्र)। पुलिस की पुरानी 100 डायल गाड़ियों को बेचने की जानकारी सोशल मीडिया पर वायरल हो गई है। पुलिस लाइन के यार्ड में खड़ी इन गाड़ियों का वीडियो बनाकर एक निजी इंस्टाग्राम अकाउंट 'गैंगस्टर सेलवैन' से पोस्ट किया गया, जिसमें खरीदने के लिए एक संपर्क नंबर भी दिया गया है। इस मामले में पुलिस ने साइबर सेल को जांच के निर्देश दिए हैं।

प्रतिबंधित एरिया में बनाई वीडियो

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सूर्यकांत शर्मा ने बताया कि पुरानी डायल 100 गाड़ियां पुलिस लाइन के यार्ड में ही खड़ी हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि पुलिस लाइन के यार्ड में वीडियो बनाना प्रतिबंधित है। पुलिस को सोशल मीडिया पर इन गाड़ियों को बेचने के संबंध में वीडियो वायरल होने की जानकारी मिली है।

जांच में जुटी पुलिस

पुलिस इस बात की भी जांच कर रही है कि वीडियो किस मकसद से बनाया और वायरल किया गया। वीडियो बनाने और अपलोड करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। वीडियो सामने आने के बाद से पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया है।

वीडियो में दिख रहे लड़के

वायरल वीडियो में पुलिस और डायल 100 लिखी गाड़ियां मैदान में साफ दिख रही हैं। कुछ गाड़ियों के बोनट और गेट खुले हुए हैं, और चार-पांच युवक उन्हें चेक करते हुए नजर आ रहे हैं। यह वीडियो करीब 50 सेकंड का है और इसमें कहा गया है कि 'वाहनों को रिसेल करना है।' वीडियो में एक नंबर शेयर किया गया है और वाहन खरीदने के लिए संपर्क करने को कहा गया है। पुलिस इस वायरल वीडियो की गहनता से जांच कर रही है।

जिलों में परिवहन सेवा प्रबंधन के लिए सौंपे अधिकार

एमपी यात्री परिवहन इंफास्ट्रक्चर लिमिटेड प्रबंध संचालक होंगे सहायक क्षेत्रीय कंपनियों के पदेन अध्यक्ष

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में लोक परिवहन सेवा शुरू करने के पहले राज्य सरकार ने जिलों में परिवहन सेवा प्रबंधन के लिए अधिकार सौंपे हैं। ग्वालियर चंबल संभाग के लिए परिवहन विभाग द्वारा एक नई कम्पनी के गठन की प्रक्रिया शुरू की गई है वहीं बाकी संभागों के लिए छह कम्पनियों के अलग-अलग क्षेत्र के आधार पर जिम्मेदारी सौंपी गई है।

परिवहन विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार प्रदेश में सार्वजनिक यात्री परिवहन सेवाओं पर कंट्रोल और प्रशासनिक एकरूपता को लेकर मध्य प्रदेश यात्री परिवहन और इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड की प्रबंध संचालक को सहायक क्षेत्रीय कंपनियों का पदेन अध्यक्ष नॉमिनेट किया गया है। इसके माध्यम से क्षेत्रीय स्तर पर सार्वजनिक यात्री परिवहन सेवाओं पर प्रभावी प्रबंधन किया जा सकेगा। परिवहन विभाग के अनुसार भोपाल सिटी लिंक

लिमिटेड को भोपाल एवं नर्मदापुरम संभाग के सभी जिलों, अटल इंदौर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विस लिमिटेड को इंदौर संभाग के सभी जिलों और जबलपुर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड को जबलपुर संभाग के सभी जिलों के लिए पदेन अध्यक्ष नॉमिनेट किया गया है।

भोपाल में गोमांस मुद्दे पर घिरी 'शहर सरकार'

एमआईसी मेंबर बोले- मैं खुद चला दूंगा बुलडोजर; सांसद ने कहा-सबकी भूमिका की जांच

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जिंसी स्थित आधुनिक स्लॉटर हाउस से निकले मीट में गोमांस के मुद्दे पर 'शहर सरकार' अपनों से ही घिर गई हैं। स्लॉटर हाउस शुरू करने और जिम्मेदारों की भूमिका पर सांसद आलोक शर्मा ने कड़ा रुख अख्तियार किया है। वहीं, पूर्व गृह मंत्री के खास समर्थक और 'शहर सरकार' में ही मंत्री (एमआईसी मेंबर) जगदीश यादव ने जिम्मेदारों को निशाने पर लिया है।

एमआईसी मेंबर यादव ने मीडिया से चर्चा में कहा, स्लॉटर हाउस बंद करना विषय नहीं है। बड़ा मसला तो यह है कि स्लॉटर हाउस में गोमांस कटा कैसे? इसे निगम कैसे चला रहा था? अफसर उदित गर्ग क्या देख रहे थे? क्या एई गर्ग मीट को एक्सपोर्ट करने की परमिशन दे सकते हैं? 24 अक्टूबर-25 को जब मेयर इन कौंसिल की बैठक हुई थी, तब सिर्फ निर्माण कार्य में समय वृद्धि दिए जाने का ही विषय था, लेकिन एई गर्ग ने इसे संकल्प बताते हुए नोटशीट दी। जिसमें असलम चमड़ा को स्लॉटर हाउस का संचालन 20 साल के लिए सौंप दिया गया। यह पूरा खेल इस तरह से खेला गया कि किसी को भनक भी नहीं लगे।

दूसरी ओर, तब कुकर्मी समेत अन्य मामलों में अपराधियों के घरों पर बुलडोजर चल जाता है तो स्लॉटर हाउस मामले में बुलडोजर शांत क्यों है? पुलिस एफआईआर में साफ लिखा है कि मीट में गोमांस था। इस मामले में असलम चमड़ा की गिरफ्तारी हुई है, लेकिन उसके विरुद्ध रासुका की कार्रवाई नहीं की गई। न ही दोषी अधिकारियों पर बड़ी कार्रवाई की गई।

मैंने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मांग की है कि वे असलम चमड़ा के घर पर बुलडोजर चलाने के आदेश दें, या फिर मुझे आदेशित करें। हम सब बुलडोजर चला देंगे।

इस मामले में सांसद आलोक शर्मा ने कहा कि संगठन स्तर पर चर्चा हुई है। सारी चीजों का बारीकी से अध्ययन कर रहे हैं। किसी भी दोषी को नहीं छोड़ा जाएगा। दूध का दूध और पानी का पानी होगा। सांसद शर्मा ने कहा कि जिन्होंने ये सब किया, उनकी भूमिका की जांच हो।

बच्ची से रेप... आलीराजपुर के युवक को फांसी की सजा

प्राइवेट पार्ट में डाली थी 5 इंच की रॉड; 45 दिन बाद गुजरात कोर्ट का फैसला

आलीराजपुर (नप्र)। सात साल की बच्ची से रेप के मामले में गुजरात की राजकोट कोर्ट ने आलीराजपुर (मप्र) के युवक को फांसी की सजा सुनाई है। रेप के बाद युवक ने बच्ची के प्राइवेट पार्ट में 5 इंच लंबी रॉड डाल दी थी।वारदात बीते साल 4 दिसंबर को हुई। पुलिस ने शक के आधार पर आरोपी को गिरफ्तार किया और 4 दिनों में 8 दिसंबर को आरोपी के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की थी।

12 जनवरी 2026 को अदालत ने अपना फैसला सुनाते हुए आरोपी को दोषी करार दिया। इसके बाद राजकोट की विशेष अदालत को 15 जनवरी को सजा सुनानी थी, लेकिन तारीख बदलकर 17 जनवरी कर दी गई।आज शनिवार को विशेष अदालत के न्यायाधीश वीए. राणा साहब ने आरोपी राम सिंह तेर सिंह दुडवा (उम्र 30) के खिलाफ 45 दिन बाद अंतिम फैसला देते हुए मौत की सजा सुनाई।

आरोपी ने बच्ची के गुप्तांगों में 5 इंच की लोहे की छड़ डालकर उसके साथ बलात्कार किया। बच्ची की चीखें सुनकर बगल के कमरे में मौजूद उसकी चाची दौड़कर आई, जबकि आरोपी रामसिंह मौके से फरार हो गया था।

50 सालों से एक सेकेंड के लिए भी नहीं सोया यह रिटायर्ट अधिकारी

75 सालों में पूरी तरह से फीट, डॉक्टर भी हैरान

रीवा (नप्र)। कहते हैं अच्छी सेहत के लिए गहरी नींद जरूरी होती है। मध्य प्रदेश के रीवा के रहने वाले मोहन लाल द्विवेदी ने साइंस के इस दावे को गलत साबित कर दिया है। रिटायर्ट ज्वाइंट कलेक्टर मोहन लाल द्विवेदी 50 सालों से एक पल के लिए भी नहीं सोए हैं। इसके बाद भी वह पूरी तरह से फीट हैं और स्वस्थ्य हैं। डॉक्टर इसे नींद नहीं आने की बीमारी मान रहे हैं वहीं मोहन लाल द्विवेदी का कहना है कि वह पूरी तरह से फीट हैं।

दावा 50 साल से वह सोए ही नहीं- मोहन लाल का दावा है कि उन्होंने 50 सालों से अभी तक सोए ही नहीं। उन्होंने बताया कि 1973 में लेक्चरर के पद पर उनकी नौकरी लगी। इसके बाद धीरे-धीरे उन्हें नींद आनी बंद हो गई। जुलाई 1973 से उन्हें पूरी तरह से नींद आनी बंद हो गई जिसके बाद उन्होंने एमपीपीएससी की तैयारी शुरू कर दी। 1974 में उन्होंने एमपीपीएससी पास की और नायब तहसीलदार बन गए।

2001 में रिटायर हुए- 2001 में वे ज्वाइंट कलेक्टर के पद से रिटायर हुए। मोहन लाल द्विवेदी की अभी 75 साल है, लेकिन उन्हें नींद नहीं आती। उनका कहना है कि वे रात को लेटते हैं, पलकें बंद होती हैं, लेकिन दिमाग जागता रहता है। उन्हें नींद आती ही नहीं है। इसके बाद भी वह पूरी तरह से फीट हैं। उन्हें किसी तरह की कमजोरी नहीं है। वह पैदल भी चलते हैं। खाने में भी उन्हें कोई दिक्कत नहीं है।

दवाएं भी कराई

मोहन लाल के अनुसार, जब शुरू में नींद नहीं आती थी तो उन्होंने दवाएं लीं। पहले दिक्कत होती थी लेकिन अब उन्हें कोई दिक्कत नहीं होती है। उन्होंने कहा कि नींद नहीं आती तो कोई बात नहीं शरीर पूरी तरह से स्वस्थ्य है।

क्या कहा मोहन लाल ने

मोहन लाल द्विवेदी ने बताया, मुझे नींद आती ही नहीं है। रात को लेट तो जाता हूं, लेकिन नींद नहीं आती। जिसके बाद किताबें पढ़ता हूं, टहलता रहता हूं। अब यह मेरी दिनचर्या बन गई है। उन्होंने बताया कि नौकरी के दिनों में भी उनके कार्यशैली की चर्चा होती थी। उन्होंने कहा कि वह कई किमी तक पैदल चलते हैं लेकिन उन्हें किसी तरह की थकान या कमजोरी नहीं होती है।

मौनी अमावस्या पर विशेष

योगेश कुमार गोयल
लेखक पत्रकार हैं।

मौन का महत्व और आत्मिक शांति का पर्व

हिन्दू धर्म में माघ मास को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है, जिसे कार्तिक मास के समान ही पुण्य मास माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार माघ मास में पवित्र स्नान एवं दान करने से व्यक्ति को पुण्य के समान फल की प्राप्ति होती है। वैसे तो इस मास में आने वाले सभी व्रत और त्यौहारों का काफी महत्व है लेकिन इस माह की अमावस्या का तो विशेष महत्व माना गया है। स्कंद पुराण में अमावस्या तिथि को पर्व कहा गया है और शास्त्रों के अनुसार माघ मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि का तो बड़ा महत्व है। इस अमावस्या तिथि को 'मौनी अमावस्या' के नाम से जाना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ऋषि मनु का अवतरण इसी दिन हुआ था और इसीलिए इसे 'मनु अमावस्या' भी कहा जाता है। यह दिन भगवान विष्णु और पितरों को समर्पित है और धार्मिक मान्यता है कि इस दिन पवित्र नदी में स्नान करने से पापों से छुटकारा मिलता है और पितरों की कृपा बनी रहती है। इस शुभ अवसर पर गंगा स्नान का तो विशेष महत्व है। मान्यता है कि इस दिन देवी-देवता पवित्र संगम में निवास करते हैं। ऐसे में गंगा का जल अमृत के समान माना जाता है। मौनी अमावस्या के दिन गंगा अथवा संगम में स्नान से तन-मन निर्मल होने के साथ निरोग काया के साथ पापों का क्षय होता है। हिन्दू पंचांग के अनुसार माघ मास के शुक्ल पक्ष की अमावस्या यानी 'मौनी अमावस्या' इस वर्ष 18 जनवरी को मनाई जा रही है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य जिस दिन चंद्रमा के साथ मकर राशि में विराजमान होते हैं, उसी दिन को मौनी अमावस्या कहा जाता है। मान्यता है कि माघ मास में जब सूर्य मकर राशि में होता है, तब तीर्थपति प्रयागराज में देवता, ऋषि, किन्नर और अन्य देवगण तीनों नदियों के संगम में स्नान करते हैं। स्कंद पुराण में कहा गया है कि इस दिन भगवान सूर्य की उपासना और तर्पण आदि करने से व्यक्ति को पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है और इस दिन पवित्र नदियों में स्नान करने, व्रत, तर्पण और दान आदि करने से असंभव कार्य भी पूरे हो जाते हैं। इस बारे में महापुराण में कहा गया है कि इस दिन गंगा नदी में पवित्र स्नान करने के पश्चात् व्यक्ति को तिल तथा गुड़ से तर्पण आदि करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से व्यक्ति पुण्य का भोगी होता है और सभी पापों से मुक्त हो जाता है। विभिन्न पुराणों के अनुसार इस दिन सभी पवित्र नदियों और पतित पावनी मां गंगा का जल अमृत के समान हो जाता है, इसीलिए इस दिन गंगा स्नान करने से अश्वमेघ यज्ञ करने के समान फल मिलता है। गंगा को तो हिन्दू धर्म में वैसे भी सबसे पवित्र

नदी माना गया है। मौनी अमावस्या के दिन मौन धारण कर गंगा-यमुना-सरस्वती की त्रिवेणी में स्नान करने को तो सर्वोत्तम माना गया है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सभी पवित्र नदियों में इस दिन देवताओं का वास होता है, इसीलिए इस पावन दिन गंगा स्नान और संगम स्नान का तो विशेष महत्व है। माघ माह में संगम स्नान के महत्व को लेकर एक कथा प्रचलित है। कहा जाता है कि जब सागर मंथन से भगवान धन्वन्तरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, तब उस अमृत कलश के लिए देवताओं एवं असुरों में जबरदस्त खींचतान शुरू हो गई और खींचतान के दौरान अमृत कलश से अमृत की कुछ बूंदें छलककर प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन में जा गिरी थी। इसीलिए मान्यता है कि इन तीर्थ स्थलों की नदियों में स्नान करने पर अमृत स्नान का पुण्य प्राप्त होता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि जो पुण्य सतयुग में तप से मिलता है, त्रेता युग में ज्ञान से, द्वापर युग में ईश्वर की भक्ति से और कलियुग में दान से, वही पुण्य माघ मास में संगम स्नान से प्राप्त होता है। माघ मास के शुक्ल पक्ष की अमावस्या को 'मौनी अमावस्या' कहे जाने के पीछे एक मान्यता यह है कि मनु ऋषि का जन्म इसी पावन तिथि पर हुआ था और मनु शब्द से ही इस अमावस्या को 'मौनी अमावस्या' कहा जाने लगा। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस दिन मौन रहकर ईश्वर की साधना की जाती है, इसलिए इसे मौनी अमावस्या कहा जाता है। मौनी अमावस्या को माघी अमावस्या भी कहा जाता है। माना जाता है कि मौनी अमावस्या के दिन मौन व्रत धारण कर ईश्वर का स्मरण करने से मुनि पद की प्राप्ति होती है और प्राणी की आध्यात्मिक ऊर्जा का स्तर बढ़ता है। मौन का अध्यात्म के शिखर को छूने में अहम योगदान होता है, इसीलिए मौन का अध्यात्म जगत में सदैव महत्वपूर्ण स्थान रहा है। दरअसल मौन को भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक शिखर तक पहुंचने का सबसे सटीक और शाश्वत माध्यम माना गया है। इसीलिए हमारे साधु-संतों और ऋषि-मुनियों ने सदैव इसे अपनी आध्यात्मिक साधना का महत्वपूर्ण अंग बनाया। आचार्य चाणक्य से लेकर गौतम बुद्ध और महर्षि दयानंद सरस्वती तक सभी महापुरूषों का जीवन मौन का पर्याय ही था। गोस्वामी तुलसीदास ने तो मौन को ही सभी साधनाओं का आधार माना है। आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शुद्धि के लिए मौन रहना सबसे उत्तम माना गया है।

धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यों को करने के लिए मौनी अमावस्या की तिथि बहुत उत्तम मानी जाती है। मौनी अमावस्या के दिन मौन एवं संयम की साधना, स्वर्ग एवं मोक्ष देने वाली मानी गई है। पद्म पुराण में कहा गया है कि मौनी अमावस्या के दिन मौन रहकर किए गए जप-तप और दान से भगवान विष्णु बहुत प्रसन्न होते हैं और इससे विशेष धर्म लाभ प्राप्त होता है। हालांकि मौन रहने का वास्तविक अर्थ बाहरी दुनिया से दूर रहकर ईश्वर का स्मरण करते हुए अपने अंतर्मन में झांकना, आत्ममंथन करना, अपने अंदर की अशुद्धियों को दूर करना और मन को शुद्ध करना ही है, मौन का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि आपने मुंह से तो बोलना बंद कर दिया यानी मौन व्रत धारण कर लिया लेकिन आपका मन विचलित है और बुरे विचारों या बुराईयों से भरा पड़ा है। हमारे भीतर की नकारात्मकता तभी दूर होगी और हमारे अंदर आध्यात्मिकता का विकास भी तभी होगा, जब हम मौन रहकर अपने मन को एकाग्रचित्त करते हुए सच्चे मन से ईश्वर का स्मरण करेंगे। कहा गया है कि यदि किसी व्यक्ति के लिए मौन रखना संभव न हो तो वह अपने विचारों को शुद्ध रखे और मन में किसी प्रकार की कुटिलता का भाव नहीं आने दे।

लघुकथा

प्रकृति से संस्कृति तक

डॉ. जीवन एस रजक

कभी वह वन में था
नंगे पैरों से धरती को मापता
हवा से संवाद करता
और अग्नि से भय खाता
उसकी आँखों में प्रकृति थी
निरावृत, अनगढ़
परन्तु जीवन से भरी हुई

वह न ईश्वर को जानता था
न धर्म को
न पाप जानता था न पुण्य
उसके लिए भूख धर्म थी
सुरक्षा कर्म और प्रकृति ईश्वर

फिर धीरे-धीरे उसने देखा
रात्रि के नक्षत्रों में कोई संकेत है
वर्षा की गंध में कोई रहस्य है
और मृत्यु के मौन में कोई प्रश्न

यहीं से प्रारंभ हुई
संस्कृति की यात्रा
जब उसने पहली बार
प्रकृति को अर्थ देना शुरू किया

वह गाने लगा गीत
रचने लगा गाथाऐं
चित्रों में जीवन बुनने लगा
और जो कभी जानवरों के बीच
जिंदा रहने की होड़ में था
देखने लगा अब देवताओं के स्वप्न

उसने घर बनाए
जीने के नियम गढ़े
धर्मशास्त्रों को रचा
और स्मृतियों को बांध दिया शब्दों में

संस्कृति-
उसकी चेतना की वह मिट्टी बनी
जिसमें वह अपनी ही मानवता
पीढ़ी दर पीढ़ी बोता रहा

संस्कृतिकरण की इस यात्रा ने
एक सवाल को जन्म दिया
क्या संस्कृति अलग है प्रकृति से
या प्रकृति का ही एक जागृत रूप

क्योंकि जब-जब मनुष्य
संस्कृति में उलझकर, प्रकृति से कटा
वह भीतर से रिक्त होता गया

आज जब उसने पार कर लिया है
अंतरिक्ष की सीमाओं को
तो क्या वह
भूल चुका है अपने भीतर का अरण्य
क्या संस्कृति की उँचाईयों ने
उसे अपने ही मूल से दूर कर दिया है

या अब भी समय है-
कि वह लौटे प्रकृति की ओर
चैतन्य होकर, करूणा के साथ

क्योंकि मनुष्य की यात्रा
केवल प्रकृति से संस्कृति तक ही नहीं
संस्कृति से पुनः प्रकृति तक भी है
जहाँ दोनों मिलकर एक हो सकें
और मनुष्य, फिर से संपूर्ण हो सके।

कोलाज कला

केनवास पर आत्मा की अभिव्यक्ति

दिनेश विजयवर्गीय

प्रकृति के हरे भरे रंग रूप से प्रभावित होने वाले कलाकार अपने अंतर मन में सुख शांति पाकर और अच्छे सृजन के लिए प्रोत्साहित होते रहते हैं । वह जब भी अपने कला सृजन में जीने लगते हैं तो उनके मन में एक उत्कृष्ट कला का भाव बनने लगता है। और फिर यही चिंतन भरा भाव कलाकृति बनाने हेतु उन्हें सदा तरो ताजा बनाए रखता है। कला के प्रति समर्पित कलाकार कितने भी लंबी उम्र जिए,पर वह समय-समय पर अपनी कला सृजन की दुनिया में जीना अपना सौभाग्य मानता है।

कला जगत में एक ऐसे ही कला सृजन धरमी हैं,कोटा के 74 वर्षीय सेवा निवृत्त स्कूल व्याख्याता सुभाष केकरे । जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से चित्रकला में प्रथम श्रेणी प्राप्त कर रंगों की दुनिया में जीने वाले केकरे अभी तक कई एकल व समूह प्रदर्शनियों तथा कला मेलों में भाग ले चुके हैं। उनकी कई कला कृतियां विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं ।

कोलाज कला को लेकर उनका सोच है कि यह आत्मा की अभिव्यक्ति है। अंतर्मन में जो कुछ चिंतन होता है उसकी प्रस्तुति ही कला है। एक कलाकार प्राकृति सुंदरता से जितना प्रभावित होता है उसकी कला भी उतना ही प्रभाव छोड़ती है । कला व्यक्ति के जीवन की सरगम को गुनगुनाये रख जीवन में नया उत्साह बनाए रखती है। स्केच कला में एक्सपर्ट सुभाष केकरे कोलाज कला में भी अपनी उत्कृष्टता का प्रदर्शन कर चुके हैं । उनका कहना है कि 'बिना रंग पेंसिल से निर्मित होने वाली यह कला कल्पना के आधार पर बनाने वाली कला है। मेरे कला मन ने कागज के रंग-बिरंगे चित्रों से नया सृजन किया । घर पर रद्दी में पड़ी पत्र पत्रिकाओं में से जरूरत अनुसार रंगीन चित्र काटकर ,उन्हें अपनी कल्पना के अनुरूप प्रस्तुत करता हूं। चित्रों को फेविकोल के माध्यम से हार्ड बोर्ड या शीट पर चिपका कर यथासंभव आकर्षक लुक बनाए रखने के लिए ऐक्रेलिक कलर वार्निश का उपयोग करता हूं।'

'पत्रिकाओं में से चित्र काटसे समय यह ज्ञान होना चाहिए कि कहां पर किस तरह से चित्र बनेगा इसके लिए कई पत्रिकाओं के चित्रों को सृजन के विजन में देखना होता है ।चित्र पहले बनता है, उसका शीर्षक बाद में तय होता है। उनका सोच है कि उत्कृष्ट कला के लिए कला सृजन के प्रति मेहनत लगन व समर्पण होना चाहिए। कला की बेहतरीन प्रस्तुति के लिए धैर्य की जरूरत होती है। रंगीन पत्र पत्रिकाओं को रद्दी में डालने से पहले उसके रंगीन उपयोगी चित्र काट लेना चाहिए।' जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले केकरे अपनी कला की प्रस्तुति भी अपने इसी दृष्टिकोण से करते रहते हैं। उनका सोच की एक कलाकार को अपनी कला के प्रति जीवन भर समर्पित होकर सृजन करते रहना चाहिए।

खुशियों की मकर संक्रांति

बाल कहानी

सूर्यदीप कुशवाहा

अभिनव अपने घर की छत पर खड़ा आसमान को निहार रहा था। जनवरी की ठंडी हवाओं के बीच सूरज की गुनगुनी धूप बहुत सुहावनी लग रही थी। आज मकर संक्रांति का त्योहार था। पूरे मोहल्ले की छतें बच्चों के भा -कटे की शोर से गूंज रहा था और चारों तरफ आसमान रंग-बिरंगी पतंगों से सराबोर था। आज पतंगबाजी के नियम और सुरक्षा का पालन घर के बड़े उन्हें समझा रहे थे और साथ में सभी इस उत्सव का आनंद भी ले रहे थे।

अभिनव के पास एक बहुत ही सुंदर बड़ी लाल पतंग थी, जिसे उसने शहर के बड़े दुकान से मगवाया था। उसके पापा ने उसे मांझा पकड़ना और पतंग उड़ाना सिखाया था। अभिनव बड़ी कुशलता से अपनी पतंग को आसमान की ऊंचाइयों तक ले जा रहा था। तभी उसकी नज़र पास वाली छोटी छत पर पड़ी। वहां एक छोटा लड़का, जिसका नाम मोलू था, चुपचाप खड़ा दूसरों की पतंगें देख रहा था। मोलू के हाथ में एक छोटी सी बहुत ज्यादा फटी हुई पतंग थी और उसकी आंखों में मायूसी थी।

अभिनव समझ गया कि मोलू के पास न तो अच्छी पतंग है और न ही नया मांझा। अभिनव को याद आया कि उसकी मां ने सुबह ही कहा था, 'बेटा, मकर संक्रांति केवल पतंग उड़ाने का त्योहार नहीं है, बल्कि यह खुशियां बांटने और दान-पुण्य करने का महत्वपूर्ण पर्व है। '

अभिनव ने अपनी लाल पतंग की डोर अपनी कलाबाजी से ढीली की और उसे मोलू की छत की तरफ

उतारा। मोलू ने हैरान होकर देखा। अभिनव चिल्लाया, 'मोलू! क्या तुम मेरे साथ पतंग उड़ाओगे? यह लाल पतंग अब तुम्हारी है!' मोलू के चेहरे पर अचानक एक खुशी की मुस्कान तैर आई। उसने दौड़कर पतंग की डोर थाम ली। अभिनव ने अब अपनी दूसरी नीली पतंग की कन्नी बांध कर उसे आसमान में उड़ाया और फिर दोनों मिलकर पेंच लड़ाने लगे।

दोपहर हुई तो अभिनव की मां छत पर ताज़ा बना गुड़-तिल के लड्डू और खिचड़ी लेकर आईं। उन्होंने मोलू और उसके परिवार को भी अपने घर पर आमंत्रित किया। सबने मिलकर मकर संक्रांति के पारंपरिक व्यंजनों का आनंद लिया। अभिनव के पापा ने बच्चों को बताया कि मकर संक्रांति पर सूर्य देव 'उत्तरायण' होते हैं, जिसका अर्थ है अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना।

शाम होते-होते अभिनव ने महसूस किया कि आज उसे अपनी पतंग उड़ाने से उतनी खुशी नहीं मिली, जितनी मोलू की मदद करके और उसके साथ खुशियां बांटकर मिली। उसने सीखा कि त्योहारों का असली मजा अपनों के साथ-साथ दूसरों के चेहरे पर मुस्कान लाने से मिलती है। सूरज ढलने लगा था, लेकिन अभिनव के मन में संतोष का सूरज चमक रहा था।जिससे वह दमक रहा था।

इस तरह अभिनव और मोलू के लिए यह मकर संक्रांति सबसे यादगार बन गई।

यात्रा संस्मरण

रन ऑफ कच्छ : गुजरात की संस्कृति का आईना

मोहन वर्मा
लेखक पत्रकार हैं।

अपने पर्यटन प्रेम के चलते इस बार 'रन ऑफ कच्छ ' देखने का अवसर हाथ लगा । पर्यटन से जुड़ी संस्था यूथ हॉस्टल की गुजरात शाखा द्वारा अपने पर्यटन प्रेमी सदस्यों के लिये इस बार 7 से 11 जनवरी तक 'रन ऑफ कच्छ' का आयोजन किया गया था जिसमें देशभर के 125 से अधिक सदस्यों ने रन महोत्सव का आनंद उठाया,जिसमें मालवा और इंदौर,उज्जैन युनिट के 11 साथियों में हम भी शामिल रहे और इस संवाद की सच्चाई से रूबरू हुए कि जिसने कच्छ नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा ।

उत्साह से लबरेज हमने 5 जनवरी की रात अहमदाबाद का रुख किया और 6 जनवरी को दिन में अहमदाबाद शहर भ्रमण के साथ वहां रिवर फ्रंट,अटल ब्रिज पर चल रहे फ्लावर शो के आनंद के साथ गुजराती ख़मण,गुजराती थाली का स्वाद लिया,स्वामी नारायण मंदिर के दर्शन किये आने वाले उतरण पर्व का जोश देखा और रात भुज के लिए प्रस्थान किया

7 जनवरी की सुबह समूह के साथियों का भुज आगमन शुरू हुआ जिन्हें त्रिमंदिर परिसर और होटल्स में ठहराया गया था। नाश्ते के बाद भुज भ्रमण में पहुँचे स्मृति वन । सात खण्डों में निर्मित स्मृति वन 26 जनवरी को गुजरात के कच्छ क्षेत्र में आये विनाशकारी भूकम्प पर आधारित है जिसमें 20 हजार से अधिक लोगों ने जान गंवाई थी, 10 लाख से अधिक लोग बेघर हुए थे और करोडों की सम्पति का नुकसान हुआ था । भूकंप के कारण,हादसे और विनाश की जानकारी,और फिर प्रदेश सरकार,केन्द्र और विश्व के अन्य देशों की मदद,जन जन की इच्छाशक्ति सहायता से गुजरात के

पुनर्निर्माण देखने लायक है । भुज में ही तात्कालिक राजवंश के अवशेषों के रूप में संग्रहित आईना महल-प्राग महल के साथ विशाल स्वामीनारायण मन्दिर भी देखने लायक है ।

अगले दिन कारवाँ भुज से कच्छ के रास्ते रन ऑफ कच्छ के लिए रवाना हुआ । रस्ते में कड़ियां धुवो जो कि विश्व धरोहरों में शामिल है,वहां रेतीले रास्ते जीप के द्वारा पहुंचकर खूबसूरत प्राकृतिक पत्थरों के बीच उन धरोहरों से रूबरू हुए जिनमें समय के साथ साथ अब भीबदलाव नजर आता है । पालनपुर में भोजन के बाद हमारा कारवाँ पहुंचा छारी धाण्ड जो पक्षी अभ्यारण्य के रूप में प्रसिद्ध है मगर दुर्भाग्य से हम उन साइबेरियन पक्षियों की अठखेलियों को नजदीक से देखने से वंचित ही रहे ।

रात ढोरढ़ो स्थित कच्छ रिसॉर्ट में स्थित टेंट सिटी में पहुँचे जहां आयोजकों द्वारा शानदार भोजन और विश्राम व्यवस्था की थी।अगले दिन सुबह की शुरुआत बेहतरीन गुजराती नाश्ते से हुई और कारवां काला ढांड स्थित गुरु दत्तात्रेय मंदिर और पक्षी अभ्यारण्य पहुंचा । इसके बाद चुम्बकीय क्षेत्र होते हुए वापस बैस कैम्प पहुँचे जहां भोजन, विश्राम के बाद शाम व्हाइट डेजर्ट गये । दूर दूर तक फैले नमक के रेतीले सूखे समंदर पर पर्यटकों ने खूब आनंद उठाया रात गुलाबी ठण्ड में बैस कैम्प में समूह के सभी साथियों ने अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के साथ कैंप फायर का आनंद लिया ।

अगली सुबह खावडा से धोलावीरा के 60 किलोमीटर के सफर में 30 किलोमीटर के रोड टू हेवन से गुज़रना यादगार रहा जहां सड़क के दोनों तरफ हरहराता पानी जो कभी भरपूर बरसात में लबालब तो तेज गर्मी में कच्छ का लिटिल रन बन जाता है..सुन्दर नजारा कच्छ का,जिसके बाद पहुँचे धौलावीरा-पाँच हज़ार साल पुरानी हड़प्पा संस्कृति के अवशेष जो विश्व धरोहरों में शामिल है । वहाँ स्थित संग्रहालय,फ़ासिल म्युजियम देखने के बाद वापस बैस कैंप में जहाँ रात्रि विश्राम के बाद सभी की वापसी की तैयारी ।

भुज के यूथ हॉस्टल के आयोजकों की मेहनत,मेहमाननवाजी और देश के अनेक हिस्सों से आये पर्यटनप्रेमियों के आपसी प्रेम व्यवहार ने इस टूर को यादगार बना दिया ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वेदों में समाया है शिल्प और रहस्यमय कृतियों का संसार

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

जीवन रहस्यमय परिस्थितियों के जंजाल में जकड़ा हुआ है, परिस्थितियाँ भी ऐसी कि कई काल के कवलित हो जाने के बाद भी पहेलियों पर से पर्दा उठ पाना संभव नहीं हो सका है और आज भी लोग उसे सुलझाने में लगे हुए हैं, आश्चर्य नहीं होगा कि कुछ पहेलियाँ कभी नहीं सुलझेंगी, सुलझनी भी नहीं चाहिए नहीं तो नये का सृजन ही संभव नहीं होगा। इन्हीं पहेलियों के भरोसे लोग अपनी-अपनी रोटियाँ सेंकने पर लगे हुए थे, हैं और रहेंगे। ऋग्वेद के दसवें मंडल के 129वें सूक्त, नासदीय सूक्त के सातों मंत्रों में जीवन के रहस्यमय परिस्थितियों, ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, अस्तित्व आदि का जिक्र है। 'तब न तो सत् था न ही असत् था, अंतरिक्ष, आकाश, जीवन, मृत्यु, दिन-रात, जैसी भी कोई बातें नहीं थीं।

'तम् आसीत्तमसा गुहमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वऽइदम।

तुच्छयेनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिना जायतैकम।।' (ऋ.10/129/03)

(अग्रे) सृष्टि होने के पूर्व, (तमः आसीत) तमस् था। वह सब (तमसा गूढ़म) तमस से व्याप्त था। वह (अप्रकेतम्) ऐसा था कि उसका कुछ भी विशेष ज्ञान योग्य न था। वह (सलिलं) सलिल, एक व्यापक गतिमत् तत्व था जो (सर्व इदम् आ) इस समस्त को व्यापे था। उस समय (यत) जो था भी वह (तुच्छ्येन) तुच्छ, सूक्ष्म रूप से (आभू-अपिहितम्) चारों ओर का सब विद्यमान पदार्थ से ढका था। (तत) वह (तपसः महिना) तपस के महान सामर्थ्य से (एकम्) एक (अजायत) प्रकट हुआ।

(ऋ.10/129/03, जयदेव शर्मा)।

तमस (अंधकार, अज्ञान) और सृष्टि पर इतने गहन अध्ययनों के बाद भी अंत में प्रश्न रह ही जाता है कि कौन और कैसे? इसी सूक्त के छठे मंत्र में कौन है जो इन रहस्यों को जानता है, जिससे यह जगत प्रकट हुआ? प्रश्न रह ही जाता है हालांकि कुछ लोग निष्कर्ष तक भी पहुँचे हैं, पहुँचने के प्रयास में कुछ और भी होंगे पर बात फिर वहीं आकर रुक जाती है कि क्या जबकि सृष्टि, शून्य से ब्रह्माण्ड तक के सफर को अनगिनत वर्षों से पूरी करती चली आ रही है, में ये निष्कर्ष सभी के गूढ़ प्रश्नों का उत्तर होगी या अन्तिम होगी? नहीं बिल्कुल नहीं बल्कि हमेशा किसी नये अर्थों हेतु द्वार जरूर खुला रहेगा। कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। कला सृष्टि या ब्रह्माण्ड से इतर नहीं है या कह सकते हैं कि पहले जब केवल और केवल अंधकार और बस अंधकार ही था कला तब भी थी और वह एक जो अस्तित्व में आया, शून्य में घिरा हुआ, अंततः ज्ञान की शक्ति से उत्पन्न हुआ, कला तब भी थी। कला हमेशा से थी और कला हमेशा रहेगी।

ईश्वर को मानने वाले लोग इन सभी पहेलियों को ईश्वर प्रदत्त मानते हैं, प्रकृति के एक-एक वस्तुओं, घटनाओं को ईश्वर के इशारे पर ही चलने वाला मानते हैं और न मानने वाले भी कम से कम इतना तो मानते ही हैं कि चीजें जिस तरीके से एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं, तरीके से चल रही हैं कुछ तो है, कोई तो है जो सभी को संयोजित किए हुए है। धरा पर पलने वाला हर जीव अभिनय के मंच पर अपने-अपने हिस्से का अभिनय करता है और समय आते ही वही पात्र जो पूरे मनोयोग से अपने हिस्से का अभिनय कर रहा होता है, अपात्र हो जाता है और देह त्याग देता है।

प्रक्रिया यूँ ही चलती रहती है। संसार ऐसे ही चलता आ रहा है और अच्छी बात ये है कि ईश्वर को न मानने वाले लोग भी इस प्रक्रिया को मानते हैं और अनजाने में ही सही कोई तो है जिससे ये संसार चलायमान है, जो हर पात्र को नियंत्रित कर रहा है ऐसा मानते हैं। दुःख तो तब होता है जब अपने से पूर्व के तीन-चार पीढ़ी वालों के नाम न जानने वाले संसार के सृजनकर्ता का प्रमाण मांगते हैं, उनके समय काल को अंकों में बांधने का प्रयास करते हैं और मिलने न मिलने की अवस्था में अपने-अपने हिसाब से गोटियाँ फिट करते हैं ऐसी ही गोटियाँ हमारे वेदों, ब्रह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों पुराणों आदि को लेकर भी बिठाया जाता रहा है और आश्चर्य कि जिन वेदों और पुराणों के अध्ययन में हमारे ऋषि-मुनि, ज्ञानी अपना पूरा जीवन काल खपा देने के बाद भी खुद को अधूरे ही मानते रहें, अंधेरे में व्याप्त अंधेरी बातों तक ही पहचानते रहे, जो पता नहीं कितनें कालों तक सिर्फ और सिर्फ श्रवण परंपरा में चलती रही और अगली पीढ़ी में स्थानांतरित होती रही और जिसके लिपिबद्ध होने के समय का कोई प्रमाणिक ज्ञान नहीं है उसे एक सीमा में बांधने की ठसक ने किसी ऐसे को जो देश के बाहर से आकर (मैक्समूलर भारत आया था भी या नहीं संशय है) पहले संस्कृत का अध्ययन करता है फिर वेदों का अध्ययन करता है वो भी बहुत कम समय तक, द्वारा निर्धारित काल को वेदों का काल माना जाने लगता है। इस विशाल गहन अंधेरे-युक्त ब्रह्माण्ड में जहाँ करोड़ों जीवन एक साथ मिलकर कर भी शून्य से अधिक नहीं होंगे, जहाँ अस्तित्व-अस्तित्व के बीच भी शून्यता व्याप्त है, कोई एक खुद को विशाल अस्तित्व युक्त मानकर इन सभी के प्रमाणिकता का प्रमाणपत्र बाँटते की जुर्रत भी कैसे कर सकता है? क्या सांसारिक सृजन, सृष्टि के रहस्य से पर्दा कभी उठ सका? क्या वेदों के समय काल पर से भी पर्दा उठने की उम्मीद वो भी वास्तविकता के साथ है? नहीं है। फिर समय काल से परे होकर हमें अध्ययन की आवश्यकता है। वेद के प्रमाणिकता पर सवाल उठाने वालों से नासदीय सूक्त जिसका जिक्र अभी हुआ और जहाँ ब्रह्मांड की उत्पत्ति का बिल्कुल ही दार्शनिक अंदाज में उत्कृष्ट रूप में वर्णन मिलता है, हालांकि पूर्णता को प्राप्त है या नहीं है इससे इतर यह है कि विज्ञान में ऐसे ही प्रक्रिया को विग बैंग थियरी के रूप में जाना जाता है, गाया जाता है जो वेदों में पूर्व से ही विद्यमान है। सात मंत्रों के इस सूक्त ने संसार के लोगों का ध्यान खींचा है और अध्ययन का केन्द्र विंदु भी बना है, फिलहाल भारतीय वेदों जिन्हें अपौरुषेय माना जाता है, के काल और प्रमाणिकता पर प्रश्न उठाने वालों को पहले खुद के अस्तित्व पर प्रश्न उठाना चाहिए। वेदों में प्रत्येक मंत्र में जिनकी स्तुति होती है, को देवता (विषय) कहा जाता है और जिसने मंत्र के अर्थ का सर्वप्रथम प्रदर्शन किया, ऋषि होता है। पाश्चात्य विद्वान इन्हीं ऋषियों को ही रचयिता मान बैठते हैं। खैर हमारे वेद, पुराण हमारी थाती हैं और इन पर कितनी भी चर्चा हो कम है और बड़ी बात और भी है कि यहाँ रचे मंत्रों के अर्थ भी अनेक हैं जिन्हें लोग अपने अपने हिसाब से अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साधते हैं जिसका प्रमाण हमें कला के अधिकतर पुस्तकों से प्राप्त होता है। वेदों में, पुराणों, उपनिषदों में कला पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में कला पर विषद जानकारी उपलब्ध है जिस पर चर्चा आगे चलकर गहराई से होगी। जहाँ मनुष्यों के दैहिक प्रमाण से लेकर मंदिर निर्माण और मंदिर को मनुष्य के शरीर से तुलनात्मक अध्ययन तक का बड़े गहनता के साथ जिक्र है। चित्र, मूर्ति, काव्य, संगीत सब पर चर्चा वेदों में उपलब्ध है, पुराणों में उपलब्ध है। संलग्न कलाकृति साभार गूगल से है।

इंदौर का अनूठा राष्ट्रभक्ति उत्सव

'झंडा ऊँचा रहे हमारा

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

इंदौर की एक पहचान और है, जो शायद सबसे ज़्यादा गर्व करने लायक है यहाँ राष्ट्रीय दिवस एक उत्सव के रूप में मनाये जाते है। शहर की सामूहिक चेतना का हिस्सा बन चुका हैं। सेवा सुरभि के बैनर तले क्रियान्वित 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' अभियान ने इंदौर को देश के उन गिने-चुने शहरों में खड़ा कर दिया है, जहाँ राष्ट्रीय पर्व एक जन-आंदोलन का रूप लेते हैं। 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' अभियान ने राष्ट्रप्रेम को मंच से उतारकर सड़कों, चौराहों, स्कूलों और आम लोगों के दिलों तक पहुँचा दिया है। यह अभियान आज अपने 24वें वर्ष में है और अगले वर्ष इसका रजत जयंती वर्ष होगा। यह इस बात का प्रमाण है कि इंदौर ने राष्ट्रप्रेम को एक स्थायी परंपरा में बदल दिया है। ऐसी परंपरा, जो आदेशों से नहीं, नागरिक सहभागिता से चलती है। जो औपचारिकता से नहीं, आत्मीयता से आगे बढ़ती है।

अइंदौर को आज देश स्वच्छता के सिरमौर के रूप में जानता है। लेकिन अपने इंदौर की पहचान सिर्फ़ साफ़ सड़कों, सुंदर चौराहों और विकास के बड़े प्रोजेक्ट्स तक सीमित नहीं है। इंदौर की असली पहचान उसकी प्रगतिशील नागरिक चेतना है। इस शहर में पर्यावरण संरक्षण के प्रति सक्रियता, जल-संरक्षण, हरियाली बढ़ाने के अभियान, तालाबों और बावड़ियों के संरक्षण, साहित्यिक गतिविधियाँ, कवि गोष्ठियाँ, पुस्तक संस्कृति, रंगमंच और सामाजिक सरोकार और राष्ट्रप्रेम ये सब इंदौर की प्रगतिशीलता को परिभाषित करता हैं।

लेकिन इंदौर की एक पहचान और है, जो शायद सबसे ज़्यादा गर्व करने लायक है यहाँ राष्ट्रीय दिवस एक उत्सव के रूप में मनाये जाते है। शहर की सामूहिक चेतना का हिस्सा बन चुका हैं। सेवा सुरभि के बैनर तले क्रियान्वित 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' अभियान ने इंदौर को देश के उन गिने-चुने शहरों में खड़ा कर दिया है, जहाँ राष्ट्रीय पर्व एक जन-आंदोलन का रूप लेते हैं। 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' अभियान ने राष्ट्रप्रेम को मंच से उतारकर सड़कों, चौराहों, स्कूलों और आम लोगों के दिलों तक पहुँचा दिया है।

यह अभियान आज अपने 24वें वर्ष में है और अगले वर्ष इसका रजत जयंती वर्ष होगा। यह इस बात का प्रमाण है कि इंदौर ने राष्ट्रप्रेम को एक स्थायी परंपरा में बदल दिया है। ऐसी परंपरा, जो आदेशों से नहीं, नागरिक सहभागिता से चलती है। जो औपचारिकता से नहीं, आत्मीयता से आगे बढ़ती है।

झंडा ऊँचा रहे हमारा को और भी जीवंत बनाते हैं वे सांस्कृतिक और वैचारिक आयोजन, जिनमें देश के प्रसिद्ध कवि, कलाकार, संगीतज्ञ, विचारक और सामाजिक कार्यकर्ता हिस्सा लेते रहे हैं। कविताओं, गीतों, संवादों और प्रस्तुतियों के ज़रिये राष्ट्रप्रेम को नए अर्थ मिलते हैं।

इस अभियान की सबसे भावुक और सशक्त झलक 25 जनवरी की शाम को मिलती है, जब रीगल चौराहे पर अनाम शहीदों की स्मृति में हजारों नागरिक हजारों मोमबत्तियाँ प्रज्ज्वलित कर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। उस समय पूरा इंदौर एक स्वर में श्रद्धा से झुक जाता है। बच्चे, युवा, महिलाएँ, बुजुर्ग सब बिना किसी भेदभाव के एक साथ खड़े होकर उन शहीदों को नमन करते हैं, जिनके नाम हम नहीं जानते, लेकिन जिनकी वजह से हम आज़ाद हैं। वह बताता है कि राष्ट्रप्रेम इंदौर में किताबों में नहीं, दिलों में बसता है।

इसी तरह शहीद परिवारों का सम्मान इस अभियान की आत्मा है। हर वर्ष उन परिवारों को सम्मानित कर इंदौर यह संदेश देता है कि बलिदान केवल इतिहास की बात नहीं, बल्कि वर्तमान की जिम्मेदारी है। यह सम्मान नई पीढ़ी को यह सिखाता है कि राष्ट्रभक्ति सिर्फ़ नारों से नहीं, कृतज्ञता और संवेदना से बनती है।

सेवा सुरभि द्वारा रीगल चौराहे पर स्थापित इंडिया गेट की प्रतिकृति गणतंत्र उत्सव का प्रतीक बन चुकी है। यहाँ जब सैकड़ों स्कूली बच्चे देशभक्ति गीतों की सामूहिक प्रस्तुति देते हैं, तो लगता है मानो राष्ट्र स्वयं बच्चों की आवाज़ में बोल रहा हो। यह दृश्य बताता है कि यह केवल वर्तमान का नहीं, भविष्य का भी निर्माण कर रहा है। बच्चों के मन में राष्ट्रप्रेम का बीज यहीं पड़ता है, और वही बीज आगे चलकर जिम्मेदार नागरिक बनाता है।

इंदौर की अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और युवा संस्थाएँ गणतंत्र दिवस को जनोत्सव का रूप देने में सक्रिय भूमिका निभाती आई हैं। रंग-ए-महफ़िल, वनबंधु परिषद, अभिनव कला समाज, स्टेट प्रेस क्लब, श्री गीता रामेश्वरम ट्रस्ट, इंदौर मैनेजमेंट एसोसिएशन, भारत विकास परिषद, लायंस और रोटरी क्लब जैसे संगठनों से लेकर एनसीसी, एनएसएस, स्काउट-गाइड और विभिन्न स्कूल-कॉलेजों की इकाइयाँ तक, सभी अपने-अपने स्तर पर इस राष्ट्रीय पर्व को जीवंत बनाती हैं। यही सामूहिकता इंदौर को प्रदेश में अलग पहचान देती है।

इस पूरे आयोजन की सबसे बड़ी ताकत यह है कि यह किसी एक संस्था का कार्यक्रम नहीं है। जिला प्रशासन के नेतृत्व में इंदौर नगर पालिक निगम, इंदौर विकास प्राधिकरण, इंदौर पुलिस, सेवा सुरभि और शहर की अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाएँ मिलकर इसे एक जन-आंदोलन का स्वरूप देती हैं। शासन, प्रशासन और समाज का ऐसा समन्वय प्रदेश में दुर्लभ है। यही कारण है कि 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' अभियान आज इंदौर की पहचान बन गया है और मध्यप्रदेश में इसे 'इंदौर मॉडल' के रूप में देखा जाता है।

'झंडा ऊँचा रहे हमारा' इसी प्रगतिशील चेतना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। यहाँ नागरिक स्वयं आगे बढ़कर भागीदारी करते हैं। यही नागरिक अग्रणीता इस अभियान को विशेष बनाती है।

आज जब राष्ट्रप्रेम को अक्सर शोर, विवाद और विभाजन से जोड़ा जाने लगा है, तब इंदौर का यह अभियान हमें याद दिलाता है कि राष्ट्रप्रेम का सबसे सुंदर रूप समावेशिता है। यहाँ हर धर्म, हर वर्ग और हर उम्र के लोग एक साथ खड़े होते हैं।

आज, जब यह अभियान रजत जयंती की दहलीज़ पर खड़ा है, तो यह इंदौर के लिए गर्व का क्षण है। यह इस बात का प्रमाण है कि अपन इंदौर केवल विकास का शहर नहीं, बल्कि संस्कारों और नागरिक चेतना का शहर है।

शायद इसी कारण जब प्रदेश में कहीं राष्ट्रीय पर्वों की बात होती है, तो इंदौर अपने आप उदाहरण बनकर सामने आता है। बिना शोर किए, बिना दिखावे के, चुपचाप लेकिन पूरे गर्व के साथ–झंडा ऊँचा थामे हुए।

तस्करी की दुनिया पर एक विश्वसनीय वेब सीरीज

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

भाचौदह जनवरी, मकर संक्रान्ति को इमरान हाशमी और शरद केलकर अभिनीत नई वेब सिरीज़ -' तस्करी- द स्मगलर्स ' रिलीज हो गई ।ओयह एक सात एपीसोड का क्राइम ड्रामा है। इसे नीरज पाण्डे ने ' फ्राइडे स्टोरी टेलर्स ' के बैनर पर बनाया है। यह स्मगलिंग की उस दुनिया को दिखाती है, जो आम लोगों की नजरों से छुपी रहती है। कहानी कई देशों से जुडी हुई है जो यह बताती है कि तस्करी सिर्फ एक जगह तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका एक अंतरराष्ट्रीय संजाल? होता है ।महँगी घड़ियां, ब्रांडेड बैग, सोना, विदेशी करेंसी और नशीले पदार्थ एयरपोर्ट के रास्ते कैसे एक देश से दूसरे देश पहुँचाए जाते हैं , उसके दृष्यांकन के साथ सिरीज़ की शुरुआत होती है । साथ ही यह भी बताया जाता है कैस स्मगलर कानून, कस्टम ड्यूटी और सुरक्षा व्यवस्था की कमियों का फायदा उठाते हैं।

कहानी मूलतः मुम्बई के छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट से शुरु होती है । यहाँ कस्टम्स विभाग की एक टीम इन गैरकानूनी कामों को रोकने की कोशिश करती है ,इस टीम का प्रमुख है- अर्जुन मीणा (इमरान हाशमी) जो एक ईमानदार और मेहनती कस्टम्स अधिकारी है। वह नियमों से कोई समझौता नहीं करता। वह पूरे मन से अपना काम करता है। लेकिन जांच के दौरान उसे बार-बार यह एहसास होता है कि तस्कर बहुत चालाक हैं। वे हमेशा कानून से एक कदम आगे रहते हैं। फर्जी कागजात, गुप्त कोड और सिस्टम के अंदर मौजूद लोगों की मदद से वे खुद को बचा लेते हैं।

तस्कर की भूमिका में रद केलकर है जो कहानी में बाबा चौधरी नाम के एक बड़े तस्कर है। वह इस पूरे नेटवर्क को चुपचाप चलाते है। वह खुलकर सामने नहीं आते हैं लेकिन उनके फैसले पूरे धंधे को चलाते हैं। जब कस्टम्स टीम उसकी कमाई को नुकसान पहुँचाने लगती है, तब हालात और मुश्किल हो जाते हैं। इस टकराव के दौरान अफसरों पर काम का दबाव बढता है। उनकी निजी जिन्दगी भी प्रभावित होने लगती है। तब तस्कर और कस्टम आफिसर सामने आते हैं ।

इमरान हाशमी ने अर्जुन मीणा की भूमिका में संयमित और विश्वसनीय अभिनय किया है। वह शान्त रहते हुए भी अभिनित चरित्र का असर दिखाते हैं। शरद केलकर बाबा चौधरी को भूमिका में बिना ज्यादा शोर शान्त लेकिन खतरनाक लगते हैं। सिरीज में मिताली कामत (अमृता खानविलकर) और रविंदर गुज्जर (नंदीश सिंह संधू) जैसे चरित्र भी अहम् भूमिका निभाते हैं। ये चरित्र जाँच और ऑपरेशन के दौरान कहानी को आगे बढाते हैं। इनके अलावा फ्रेडी दारूवाला, जमील खान और अन्य कलाकारों ने भी अपने-अपने चरित्रों को मजबूती दी है।

सिरीज का निर्देशन नीरज पाण्डे और राघव एम जैरथ ने मिलकर किया है, जिसकी वजह से कहानी का टोन गंभीर और संतुलित बना रहता है। सिरीज में जरूरत से ज्यादा एक्शन या ड्रामा नहीं दिखाया गया है। जाँच की प्रक्रिया को धीरे और साफ तरीके से पेश किया गया है। कुछ एपीसोड थोड़े धीमे जरूर लग सकते हैं। इसके बावजूद कहानी ज्यादा असली और भरोसेमंद महसूस होती है । जाँच से जुड़े कुछ सीन एक जैसे लगते हैं, जिससे दोहराव महसूस होता है। इसी वजह से कुछ ऑडियंस को सिरीज खींची हुई लग सकती है, खासकर उन्हें जो तेज रफ्तार थ्रिलर पसंद करते हैं।कुल मिलाकर यह सिरीज़ एक गँभीर और वास्तविक क्राइम सिरीज है। इसमें बहुत बड़े ट्विस्ट नहीं हैं। इसके बावजूद कहानी, माहौल और अभिनय इसे देखने लायक बनाते हैं। अगर आपको सच्चाई के करीब रहने वाली, धीमी और समझदारी से बनी क्राइम कहानियां पसंद हैं, तो यह सीरीज आपको पसन्द आ सकती है।

नीमच में जीबीएस बीमारी से 2 बच्चों की मौत

- 15 नाबालिग संक्रमित, भोपाल और उज्जैन पहुंचे विशेषज्ञ, डिप्टी सीएम ने किया मनासा का दौरा

नीमच (नप्र) नीमच जिले के मनासा कस्बे में गुलियन-बेरी सिंड्रोम (जीबीएस) का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। अब तक इस बीमारी से दो बच्चों की मौत हो चुकी है, जबकि 17 लोग संक्रमित हैं। इनमें से 15 मरीज नाबालिग हैं, जिससे स्थिति और अधिक गंभीर हो गई है। शुक्रवार रात चार नए मामले सामने आने के बाद कुल संक्रमितों की संख्या 13 से बढ़कर 17 हो गई। संक्रमितों में 4 से 17 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों और किशोरों की संख्या सबसे अधिक है। केवल दो वयस्क मरीज ही इस बीमारी की चपेट में आए हैं। बच्चों में तेजी से फैल रहे संक्रमण को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग अलर्ट मोड पर है।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने घर-घर सर्वे और स्क्रीनिंग के निर्देश

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए प्रदेश के उपमुख्यमंत्री एवं लोक स्वास्थ्य व चिकित्सा शिक्षा मंत्री राजेंद्र शुक्ल शनिवार को मनासा पहुंचे। उन्होंने स्थानीय प्रशासन और स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय बैठक कर बीमारी की रोकथाम और इलाज की व्यवस्थाओं की समीक्षा की। उपमुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि घर-घर सर्वे और स्क्रीनिंग में किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो। डिप्टी सीएम ने वार्ड नंबर 15 में जीबीएस से मृतक सोनू (पिता पुरण सोनी) के परिजनों से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना दी और पूरे मामले की जानकारी ली। इसके साथ ही उन्होंने चल रहे स्क्रीनिंग कार्य का मौके पर निरीक्षण भी किया।

बीमारी के कारण और स्रोत पता कर रहे

इससे पहले शुक्रवार को उज्जैन संभागायुक्त ने भी प्रभावित क्षेत्र का दौरा कर मरीजों और उनके परिजनों से बातचीत की थी। फिलहाल भोपाल और उज्जैन से आई विशेषज्ञों की टीमें मनासा में डेरा डाले हुए हैं। ये टीमें लगातार जांच, स्क्रीनिंग और सैंपल कलेक्शन कर बीमारी के कारणों और स्रोत का पता लगाने में जुटी हैं।

गणतंत्र दिवस परेड के चलते दिल्ली एयरस्पेस प्रतिबंध

भोपाल (नप्र)नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड और उसकी रिहर्सल के चलते 19 से 26 जनवरी के बीच दिल्ली एयरस्पेस में प्रतिबंध लागू रहेंगे। इन प्रतिबंधों का असर दिल्ली एयरपोर्ट से आने-जाने वाली उड़ानों पर पड़ेगा। इसी कारण भोपाल-दिल्ली-भोपाल रूट की कुछ नियमित फ्लाइट्स को रद्द किया गया है, जिससे यात्रियों को असुविधा हो सकती है। इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट नंबर 6ई-6364/6365 (दिल्ली-भोपाल-दिल्ली), जिसका निर्धारित समय दोपहर 1:15/1:45 है, 19 से 26 जनवरी 2026 तक रद्द रहेगी। इसी तरह एयर इंडिया की फ्लाइट एआई-1723/1894 (दिल्ली-भोपाल-दिल्ली), जिसका निर्धारित समय 12:05/12:35 है, 21 से 26 जनवरी 2026 तक संचालित नहीं की जाएगी।

प्रदेश में कड़ाके की सर्दी

बर्फीली हवा से बढ़ी ठिठुरन; प्रदेश में सबसे ठंडा रहा उमरिया, पारा 4.8 डिग्री

भोपाल (नप्र)। उत्तर से आ रही बर्फीली हवाओं की वजह से मध्यप्रदेश में तेज सर्दी पड़ रही है। बीती रात उमरिया प्रदेश में सबसे ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान 4.8 डिग्री पहुंच गया। सुबह 15 से ज्यादा जिलों में हल्के से मध्यम कोहरा रहा। प्रदेश के 5 जिले- शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, कटनी और मैहर में कोल्ड वेव यानी, शीतलहर का अलर्ट है।

मौसम विभाग के अनुसार, पहाड़ों में बर्फबारी के बाद एमपी में सर्दी बढ़ी है। अगले 2 से 3 दिन तक प्रदेश में तेज ठंड पड़ेगी। 19 जनवरी से उत्तर-पश्चिम भारत में नया वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव होगा। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, नए सिस्टम की वजह से प्रदेश में बारिश-बादल वाली स्थिति भी बन सकती है।

बड़े शहरों में भोपाल सबसे ठंडा- पांच बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 7.4 डिग्री, इंदौर में 9 डिग्री, ग्वालियर में 8.2 डिग्री, उज्जैन में 10 डिग्री और जबलपुर में पारा 8.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

उत्साह - उमंग और उमड़े सैलाब से धारा नगरी की अलौकिक छटा

भोजशाला में सर्व हिंदू समाज द्वारा अखंड पूजा संकल्प के समर्थन में आव्हान वाहन रैली में दिखी भव्यता

(राजेश शर्मा)

धार। राजा भोज की धारा नगरी अपनी समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत के लिए देश और दुनिया में जानी जाती हैं। शिक्षा - संस्कृति की इस वैभवशाली नगरी में 17 जनवरी को उमड़े सैलाब ने एक बार फिर इस ऐतिहासिक नगरी के इतिहास को मानों जीवंत कर दिया। अवसर था भोजशाला में सर्व हिंदू समाज द्वारा अखंड पूजा संकल्प के समर्थन में आव्हान वाहन रैली का। भव्य वाहन रैली में उत्सव और उल्लास के रंग में धार की धरा की छटा मनमोहक दिखाई दे रही थी। संपूर्ण शहर में खासा उत्साह देखने को मिला मानों आज धार शहर भगवामय हो गया हो। हिंदू समाज ने बढ़-चढ़कर यात्रा का स्वागत किया। मातृशक्ति और युवाओं ने सरस्वती माता एवं जय श्रीराम की गूंज से गुंजायमान हो उठा था आकाश।

इस दौरान हिंदू समाज में भोजशाला में अखंड पूजा को लेकर भारी उत्साह देखा गया। युवाओं और मातृशक्तियों का उत्साह देखते ही बनता था।

महाराज भोज स्मृति बसंतोत्सव समिति एवं सर्व हिंदू समाज के आह्वान पर बसंत पंचमी के अवसर पर भोजशाला में मां वाग्देवी की पूजा अर्चना आरती पूरे दिन हिंदू समाज निर्विघ्न संपन्न कर सके इसके लिए धार शहर में 17 जनवरी को एक विशाल वाहन एवं अनुशासित आह्वान रैली का आयोजन किया गया। वाहन रैली में सकल हिंदू समाज एवं भोज उत्सव आयोजन समिति के नेतृत्व में हजारों की संख्या में सनातन प्रेमी हिंदू जनों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।वाहन रैली का श्रीगणेश श्रीफल फोड़ कर महामंत्री सुमित चौधरी ने किया। (आव्हान) वाहन रैली के संयोजक अनुराग भाटी, कार्यक्रम का संचालन निखिल जोशी ने किया।

वाहन रैली को संबोधित करते हुए महंत हरिहरानंद महाराज ने कहा कि धर्म युद्ध की बेला आई धर्म जागरण से धरती गूंजे अंतिम विजय सत्य की होगी भोजशाला में सरस्वती पूजे। मां सरस्वती मंदिर भोजशाला की मुक्ति एवं उसके गौरव की पूर्ण स्थापना के लिए सभी हिंदू परिवार भोजशाला बसंत पंचमी को अखण्ड पूजा अर्चना के लिए अवश्य पधारे। स्वामी जी ने हिंदू समाज को संकल्प दिलाया कि भोजशाला में मां वाग्देवी की प्रतिमा स्थापना तक लगातार धर्म जागरण और अनुष्ठान करना है।

समिति के मीडिया प्रमुख मोहन राठौर ने बताया कि रैली पीजी कॉलेज ग्राउंड से आरंभ होकर त्रिमूर्ति, टीवीएस, महाजन रोड, भोज हॉस्पिटल, घोड़ा चौपाटी, झंडा चौपाटी नौगांव, हटवाड़ा, मोहन टॉकीज, पिंडरवाडी, धानमंडी, भाजी बाजार, बस स्टैंड, नालछा दरवाजा, पो चौपाटी, राजवाड़ा, आनंद चौपाटी, जवाहर मार्ग, धानमंडी, रघुनाथपुरा, हटवाड़ा, छतरी चौराहा, धारेश्वर मार्ग होते हुए अखंड ज्योति मंदिर पर समापन किया गया। भोज उत्सव समिति के सभी पदाधिकारी ने हिंदू समाज का आभार माना एवं भोजशाला 23 जनवरी बसंत पंचमी को अधिक से अधिक संख्या में पधारने का संकल्प याद दिलाया। स्वामी जी का शाल, श्रीफल एवं फूलमालाओं से समिति के पदाधिकारियों समिति अध्यक्ष सुरेश चंद्र जलोदिया, महामंत्री सुमित चौधरी, संरक्षक अशोक जैन, महाप्रबंधक हेमंत दौराया, निखिल जोशी ने स्वागत किया।

ट्रेनी कॉन्स्टेबल को डंपर ने कुचला, मौके पर मौत

बड़वाह (नप्र) इंदौर से ओंकारेश्वर जा रहे भाई-बहन की बाइक को तेज रफ्तार डंपर ने टक्कर मार दी। हादसे में पीछे बैठी बहन के सिर के ऊपर से डंपर का पहिया गुजर गया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। वहीं बाइक चला रहा भाई बाल-बाल बच गया। हादसा शनिवार दोपहर करीब 1 बजे इंदौर-इच्छापुर हाईवे पर बड़वाह के पास हुआ। मृतका की

पहचान ऋचा राजोरिया (24) के रूप में हुई है। वह इंदौर में पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में कॉन्स्टेबल की ट्रेनिंग ले रही थी। बाइक चला रहा उसका भाई आशु राजोरिया इंदौर सेंट्रल जेल में पदस्थ डिप्टी जेलर है। दोनों मूल रूप से ग्वालियर के निवासी बताए जा रहे हैं।

भारत विरोधी तत्वों से बचें, तथा उनका विरोध करें

जिला आरएसएस कार्यवाह संजू सिलावट

सोहागपुर। नगर में हिंदू सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें सकल हिंदू समाज से हजारों नागरिक कर्तव्य भाव के साथ उपस्थित हुए। सोहागपुर शहर में केशव बस्ती का हिंदू सम्मेलन नगर परिषद के मंगल भवन परिसर में संपन्न हुआ। इस अवसर पर शंकर विवेकानंद आश्रम ईशरपुर संचालक स्वामी ईशानानंद सरस्वती ने सामाजिक समरसता पर अपनी बात रखी। आरएसएस जिला कार्यवाह संजू सिलावट ने हिंदू जागरण का आह्वान कर स्वदेशी अपनाने की बात कही। उन्होंने भारत विरोधी तत्वों से बचने और उनका विरोध करने का आह्वान किया। डॉ. राजकुमार शास्त्री गायत्री साधन केंद्र माखन नगर ने यज्ञ व गायत्री माता का पूजन कराया। पिपरिया से आई ब्रह्मकुमारी दीदी बीके शैलम ने अध्यात्म के प्रकाश से अज्ञानता के अंधकार को दूर करने की बात कही। इसके पूर्व भव्य कलश यात्रा देनवा कॉलोनी स्थित श्री गणेश मंदिर से निकाली गई। भगवा ध्वज के साथ निकाली गई कलश यात्रा नप मंगल भवन पहुंची। यहां हिंदुओं ने यात्रा

का पुष्प वर्षाकर अभिनंदन किया। इसके उपरांत गायत्री परिवार ने हवन आयोजन किया। प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विवि द्वारा सज्जित चैतन्य नौ देवियों व भारत माता की झांकी का अवलोकन हिंदुओं ने किया। इस दौरान जनपद पंचायत अध्यक्ष जालम सिंह पटेल, सेवानिवृत्त उपयंत्री रामभरोसे सूर्यवंशी, जपं उपाध्यक्ष राघवेंद्र रघुवंशी, समाजसेवी कृष्णा पालीवाल, रामगोपाल चौबे, अभय खंडेलवाल, सृष्टि मोहन गुप्ता, जीवन दुबे, शिवकुमार पटेल, विशाल गोलानी, भरत तिवारी व सैकड़ों नागरिक उपस्थित थे। अंत में भारत माता की आरती उपरांत भंडारे का आयोजन किया गया।

भोपाल के रहमान डकैत को कोर्ट में पेश किया

कुख्यात राजू की रिमांड खत्म, नेकबैंड पहने सिर झुकाए कोर्ट पहुंचा, हेकड़ी गायब

भोपाल (नप्र) भोपाल के कुख्यात राजू ईरानी उर्फ रहमान डकैत को 6 दिन की पुलिस रिमांड के बाद आज कोर्ट में पेश कर दिया गया। हालांकि पुलिस राजू से कोई खास जानकारी हासिल नहीं कर सकी। हिरासत के दौरान राजू लगातार बीमारी का हवाला देकर पूछताछ से बचता रहा। पुलिस ने उससे डोजियर भरवा लिया है। जिसमें उसके तमाम करीबी रिश्तेदारों और गुर्गों की जानकारी दर्ज की गई है। जाहिरा कारोबार के तौर पर राजू ने स्वयं को प्रॉपर्टी डीलर और प्लाइवुड कारोबारी बताया है।

गुजरात पुलिस ने प्रोडक्शन वारंट पर सौंपा था- भोपाल की निशातपुरा पुलिस कुख्यात राजू ईरानी को 11 जनवरी को प्रोडक्शन वारंट पर सूरत थ्से भोपाल ले आई थी। यहां उसकी चार मामलों में गिरफ्तारी की गई। इसी दिन राजू को भोपाल की जिला कोर्ट में पेश किया।जहां से उसे 17 जनवरी तक रिमांड पर भेज दिया। कोर्ट से रिमांड मंजूर होने के बाद भी राजू हंसता हुआ नजर आया। कोर्ट रूम से निकलने के बाद राजू ने कहा कि जल्द छूट जाऊंगा। हालांकि, पुलिस ने उससे पूछताछ शुरू कर दी है। इन चार मामलों में वह 2017 से लगातार फरार चल रहा था।

दो छात्राएं फांसी के फंदे पर लटकी मिलीं

परिजन का आरोप- छेड़खानी से परेशान होकर उठाया कदम, दूसरी ने पिता की डांट से डरी

जबलपुर (नप्र) ।जबलपुर के बरेला क्षेत्र में रहने वाली दो नाबालिग छात्राएं घर में फांसी के फंदे पर लटकी मिलीं। दोनों ही छात्राएं एक ही स्कूल में पढ़ती थीं। एक छात्रा के परिजन का आरोप है कि उनकी बेटी ने एक युवक की छेड़छाड़ से परेशान होकर यह कदम उठाया है। तो दूसरी ने पिता की डांट से नाराज होकर ऐसा किया। घटना की जानकारी लगते ही बरेला थाना पुलिस मौके पर पहुंची और पंचनामा कार्रवाई कर पीएम के लिए मेडिकल भेजा। इधर, छात्रा के परिजनों ने नाराज होकर बरेला थाने का घेराव कर दिया। छात्रा के परिजनों का कहना है कि दूसरे गांव का एक युवक उसे लगातार परेशान कर रहा था, जिसके कारण उसने आत्महत्या कर ली।

15 वर्षीय छात्रा को गाड़रखेड़ा गांव में रहने वाला प्रिंस ठाकुर दो माह से परेशान कर रहा था। परिजनों ने पुलिस को बताया कि जब छात्रा स्कूल जाती तो वह रास्ते में रोककर बाइक में बैठने को कहता था। फोन कर परेशान करते हुए मिलने को बोलता था। छात्रा ने प्रिंस की शिकायत अपने पिता से की तो उन्होंने गाड़रखेड़ा जाकर आरोपी के पिता से शिकायत की, जिस पर आश्वासन दिया गया कि दोबारा यह गलती नहीं होगी। शुक्रवार की शाम को छात्रा स्कूल से लौटकर आने के बाद गुमसुम थी। खाना खाने के बाद वह अपने कमरे में चली गई। देर रात जब छात्रा के मां ने दरवाजा खटखटाया तो अंदर से कोई आवाज नहीं आई। फौरन छात्रा के पिता और भाई को जगाया, काफी देर तक दरवाजा खटखटाया। आवाज सुनकर आसपास के लोग आ गए। ग्रामीणों ने दरवाजा तोड़ा तो देखा कि छात्रा फांसी पर लटकी हुई थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

छात्रा ने फांसी लगाई, 500 रुपए निकाले थे- बरेला थाना के वार्ड 9 में रहने वाली 15 वर्षीय छात्रा ने भी आत्महत्या कर ली। पुलिस की पूछताछ में परिवार वालों ने बताया कि शुक्रवार को छात्रा ने मां के पास रखे 500 रुपए निकाल लिए थे, जिसकी जानकारी शाम को पिता को लगी तो उन्होंने छात्रा को डांट लगाते हुए दोबारा इस तरह की गलती ना करने को कहा। पिता की डांट के बाद छात्रा चुप रही। देर रात को उसने फांसी लगा ली।

उद्योगों द्वारा क्षेत्र के जरूरतमंदों की मदद सराहनीय-अपर कलेक्टर

देवास। समाज में बहुत से लोग ऐसे है जिन सबकी मदद करना सरकार के द्वारा चाहकर भी सम्भव नहीं हो पाता। समाज में सकारात्मक बदलाव सरकारी प्रयासों के साथ समाजसेवियों और सक्षम लोगों की सामुहिक भागीदारी से ही सम्भव है ऐसे में उद्योगों द्वारा अपने सीएसआर फंड से किये जाने वाले काम सराहनीय है ये बात अपर कलेक्टर शोभाराम सोलंकी ने कही। सोलंकी, नवीन फ्लोरिन उद्योग द्वारा ग्राम छापरी के सरकारी स्कूल के बच्चों को कंप्यूटर और स्वेटर वितरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रूप में बोल रहे थे। शिप्रा संकुल के ग्राम छापरी के सरकारी स्कूल में नवीन फ्लोरिन उद्योग के सौजन्य से तथा सामाजिक संस्था एक्ट ईव फाउंडेशन के समन्वय से ये कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें स्कूल में बच्चों के लिए एक कम्प्यूटर तथा 65 स्वेटर का वितरण किया गया जिन्हें पाकर बच्चों के चेहरे खिल उठे। नवीन फ्लोरिन के अतुल मौर्य तथा एक्ट

ईव फाउंडेशन के मोहन वर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में नवीन फ्लोरिन के संजीव सेठ (हेड इंजीनियरिंग एंड प्रोजेक्ट्स) अनामिका सिंह (डिप्टी मैनेजर प्रोजेक्ट मैनेजमेंट) भी अतिथि रूप में उपस्थित थे जिन्होंने कहा कि सीएसआर फंड से मदद हमारा सामाजिक दायित्व है जो हम निभाते रहेंगे।एक्ट ईव फाउंडेशन के मोहन वर्मा ने कहा विगत दस बरसों से हम उद्योगों, समाजसेवियों, बैकों की मदद से सरकारी खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में फ़र्नीचर, कंप्यूटर, आरओ, सेनेटरी पैड मशीने, और अन्य जरूरी संसाधन उपलब्ध करवाने के मिशन में सक्रिय हैं। कार्यक्रम में जन शिक्षक अरुण मिश्रा, सरपंच केदार पटेल, रितेश तलरेजा, अशोक शर्मा, हँसा चौधरी, राजेश चौहान, हरनामसिंह अचाले, आशा बडगोत्रीया, देवकरण मालवीय, बबीता चौधरी सहित अनेक ग्रामवासी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन, हँसा चौधरी ने किया, आभार राजेश चौहान ने माना।

महाभारत समागम

श्रीलंका और मणिपुरी शैली में महाभारत का मंचन

भोपाल। वीर भारत न्यास द्वारा आयोजित सभ्यताओं के संघर्ष एवं औदार्य की महागाथा पर केंद्रित महाभारत समागम के दूसरे दिन श्रीलंका और पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर के कलाकारों ने अपनी अपनी शैलियों में महाभारत के प्रसंग को नृत्य- नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से प्रस्तुत किया।

बहिरंग के मंच पर अरियारत्ने कालूराच्चि निर्देशित एके फोक आर्ट रिसर्च सेंटर कोलंबो, श्रीलंबा द्वारा संगीत नाट्य प्रस्तुति पांचाली की प्रस्तुति दी गयी। इसके पहले पूर्वरंग में कल्याण कृष्ण नायर द्वारा निर्देशित कथकली नृत्य शैली में दु:शासन वध, मणिपुर से आये टिकेन सिंह निर्देशित नृत्य नाट्य उर्वशी तथा दिल्ली के हिमांशु श्रीवास्तव के निर्देशन में तैयार हुई शिखंडी का मंचन किया गया। कार्यक्रम के पूर्व वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी द्वारा कलाकारों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

बहिरंग मंच पर संगीत-नाट्य प्रस्तुति पांचाली के अंतर्गत महाभारत का एक महत्वपूर्ण और भावनात्मक प्रसंग मंचित किया गया। कथा की शुरुआत बदरिकाश्रम के शांत और रमणीय वातावरण से होती है, जहाँ पांडवों की महारानी द्रौपदी प्रकृति की सुंदरता का आनंद ले रही हैं। तभी एक अद्भुत पुष्प उनके पास बहकर आता है। उस फूल को देखकर द्रौपदी और अधिक पुष्प पाने की इच्छा प्रकट करती हैं और इस कार्य के लिए भीम को भेजती हैं।द्रौपदी की इच्छा पूरी करने निकले भीम घने वन में प्रवेश करते हैं, जहाँ उनके भारी कदमों से भगवान हनुमान की निद्रा भंग हो जाती है। हनुमान पहले भीम का मार्ग रोकते हैं और अपनी अपार शक्ति का परिचय देते हैं। बार-बार प्रयास के बावजूद जब भीम असफल होते हैं, तब वे हनुमान की महानता स्वीकार करते हैं। इसके

बाद हनुमान स्वयं को भीम का भाई बताते हैं और भविष्य में अर्जुन के रथ पर विराजमान होकर उनका साथ देने का वचन देते हैं। यह दृश्य दर्शकों के लिए अत्यंत भावुक और प्रेरणादायक रहा। यह प्रसंग वीरता, दिव्य मार्गदर्शन, प्रकृति के सम्मान, पारिवारिक एकता और पांडवों की भावी युद्ध एवं आध्यात्मिक तैयारी को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

निर्देशक हिमांशु श्रीवास्तव के निर्देशन में अंतरंग मंच पर नाट्य प्रस्तुति शिखंडी का सशक्त मंचन किया गया। यह नाटक महाभारत के उस पात्र पर केंद्रित है, जिसे लंबे समय तक समाज और इतिहास ने हाशिये पर रखा। कुरुक्षेत्र की रणभूमि में खड़ा शिखंडी केवल युद्ध नहीं, बल्कि अपनी पहचान और स्वीकृति की आंतरिक लड़ाई भी लड़ता है।

दुनिया में धाक ज़माने वाली हिंदी फ़िल्में

भारतीय सिनेमा ने पिछले एक दशक में वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान पूरी तरह बदल ली। अब भारतीय फिल्में केवल घरेलू बॉक्स ऑफिस तक सीमित नहीं हैं, बल्कि चीन, अमेरिका और खाड़ी देशों में भी रिकॉर्ड तोड़ कमाई कर रही हैं। इन फिल्मों की सफलता यह दर्शाती है कि भारतीय सिनेमा अब तकनीकी और कहानी के मामले में वैश्विक स्तर पर हॉलीवुड को टक्कर दे रहा है।

इन टॉप 10 फिल्मों की सूची, जिन्होंने वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस पर 'तूफानी' कमाई की।

दंगल (2016): आमिर खान स्टारर 'दंगल' भारतीय सिनेमा के इतिहास की सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्म है। दिलचस्प बात यह है कि इस फिल्म ने भारत से कहीं ज्यादा कमाई चीन में की। नितेश तिवारी के निर्देशन में बनी इस फिल्म ने वर्ल्डवाइड 2,024 करोड़ का कारोबार किया, जिसमें से लगभग 1,300 करोड़ अकेले चीन से आए थे।

बाहुबली 2: द कन्क्लूजन (2017) : एसएस राजामौली की इस फिल्म ने भारतीय सिनेमा के लिए '1000 करोड़ क्लब' की शुरुआत की थी। 'कटप्पा ने बाहुबली को क्यों मारा?' के सस्पेंस ने इस फिल्म को दुनियाभर में 1,810 करोड़ की कमाई तक पहुंचाया। यह आज भी भारत की सबसे सफल फिल्मों में से एक है।

आरआरआर (2017) : एक बार फिर राजामौली ने 'आरआरआर' के जरिए वैश्विक पटल पर तहलका मचाया। जूनियर एनटीआर और रामचरण की इस फिल्म ने न केवल 1,387 करोड़ कमाए, बल्कि इसके गाने 'नाटू नाटू' ने ऑस्कर जीतकर इतिहास रच दिया। जापान में इस फिल्म को जो प्यार मिला, वह अभूतपूर्व था।

केजीएफ चैप्टर-2 (2022) : कन्नड़ सुपरस्टार यश की 'केजीएफ-2' ने बॉक्स ऑफिस पर सुनामी ला दी थी। प्रशांत नील के निर्देशन में बनी इस फिल्म ने दुनिया भर में 1,250 करोड़ का कलेक्शन किया। इस फिल्म ने साबित कर दिया कि बेहतरीन कंटेंट वाली क्षेत्रीय फिल्में भी ग्लोबल स्तर पर राज कर सकती हैं।

कल्कि 2898 एडी (2024) : प्रभास, अमिताभ बच्चन और दीपिका पादुकोण स्टारर इस साइंस-फिक्शन फिल्म ने विजुअल इफेक्ट्स के नए मानक स्थापित किए। भविष्यवादी कहानी और पौराणिक कथाओं के मेल ने इसे वैश्विक स्तर पर 1,100 करोड़ से अधिक की कमाई करने में मदद की।

जवान (2023) : शाहरुख खान के लिए साल 2023 'करियर-डिफाइनिंग' रहा। एटली के निर्देशन में बनी 'जवान' ने अपनी मास अपील और सामाजिक संदेश के दम पर वर्ल्डवाइड 1,148 करोड़ का शानदार बिजनेस किया।

पठान (2023) : शाहरुख खान की चार साल बाद वापसी इसी फिल्म से हुई थी। 'पठान' ने रिलीज होते ही रिकॉर्ड्स की झड़ी लगा दी और दुनियाभर में 1,050 करोड़ की कमाई के साथ बॉलीवुड का सूखा खत्म किया।

एनिमल (2023) : रणबीर कपूर और संदीप रेड्डी वांगा की इस फिल्म ने काफी विवादों के बावजूद बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त प्रदर्शन किया। फिल्म ने अपनी डार्क थीम और संगीत के दम पर वर्ल्डवाइड 915 करोड़ का कलेक्शन किया।

बजरंगी भाईजान (2015): सलमान खान की यह फिल्म अपनी इमोशनल कहानी के कारण भारत और चीन दोनों जगह बेहद सफल रही। इसने वैश्विक स्तर पर ?918 करोड़ की कमाई की, जिसमें चीन का बड़ा योगदान था।

सीक्रेट सुपरस्टार (2017): यह सूची की सबसे चौंकाने वाली फिल्म हो सकती है। आमिर खान और ज़ायरा वसीम की इस छोटी बजट की फिल्म ने चीन में अपनी लोकप्रियता के कारण वर्ल्डवाइड 900 करोड़ से अधिक की कमाई की थी।

ये 7 बड़ी फिल्में धमाका करेंगी

जो दर्शक शिकायत करते हैं कि हमारे पास ज्यादा अच्छी भारतीय रिलीज़ नहीं हैं, तो उन्हें पता होना चाहिए कि 2026 से 2027 के बीच 7 सबसे बड़ी फिल्में रिलीज होंगी। इनमें रणबीर कपूर की 'रामायण' पार्ट-1 जहां 2026 में आएगी तो इसका दूसरा पार्ट 2027 में रिलीज किया जाएगा। शाहरुख खान के बर्थडे पर हाल ही में सुपरस्टार की अपकमिंग फिल्म 'किंग' की पहली झलक रिलीज की गई थी। इसे देखने के बाद फैंस इस फिल्म की रिलीज को लेकर सुपर एक्साइटेड हैं। 'किंग' में शाहरुख खान के साथ पहली बार उनकी बेटी सुहाना खान भी स्क्रीन शेयर करती नजर आएगी। फिल्म के अन्य कलाकारों में अभिषेक बच्चन और दीपिका पादुकोण हैं। ये फिल्म भी मच अवेटेड है और ये 2026 में रिलीज होगी।

'वाराणसी' का टीजर भी रिलीज किया गया, जिसमें महेश बाबू रुद्र के रूप में अपने पहले लुक

में बैल की सवारी करते नजर आए, जिसे भगवान शिव का अवतार माना जाता है। इस फिल्म के निर्माता एसएस राजामौली हैं। इस अपकमिंग बड़ी फिल्म में प्रियंका चोपड़ा ने मंदाकिनी का किरदार निभाया है और पृथ्वीराज सुकुमारन कुंभा के किरदार में हैं। ये फिल्म साल 2027 में रिलीज होगी।

अन्य बड़ी रिलीज फिल्मों में वहीं ड्रैगन (जूनियर एनटीआर-प्रशांत नील के साथ टेंटेटिव टाइटल) 2026 में रिलीज होगी। वहीं यश की 'टॉक्सिक : अ फेयरी टेल फ़ॉर ग्रोन-अप्स' भी 2026 में ही सिनेमाघरों में दस्तक देगी। इसके अलावा प्रभास की 'स्पिरिट' भी अगले साल यानी 2026 में ही बड़े पर्दे पर रिलीज होगी। एटली, अल्लू अर्जुन और दीपिका पादुकोण स्टारर एए22एक्सए6 भी सबसे बड़ी फिल्मों में से एक है। ये फिल्म भी 2026 में बड़े पर्दे पर आएगी। इन सब फिल्मों को लेकर फैंस में अभी से बेहद एक्साइटमेंट हैं।

रियल बॉक्स

जो नफरत से भरा, वो दर्शकों का प्यारा

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

अक्षय खन्ना और बॉबी देओल दोनों ही अपने ज़माने के सफल हीरो के बेटे हैं। अपने पिता की तरह उन्होंने भी हीरो की इमेज को अपनाया। लेकिन, वे अपने पिता की तरह छवि नहीं बना सके। फिर हालात बदले और इन कलाकारों ने अपनी छवि उलट दी। हीरो का मुखौटा उतार खलनायक की भूमिका स्वीकार ली। दोनों नई भूमिकाओं में सफल हो गए। अक्षय ने 'छावा' और 'धुरंधर' में क्रूरता का जलवा दिखाया तो बॉबी ने 'आश्रम' वेब सिरीज के बाद 'एनीमल' फिल्म में खलनायक जिंदा कर दिया। इन्होंने निगेटिव किरदारों को नई गरिमा और आकर्षण दिया व अब प्रभावी खलनायकों में शामिल हैं। दोनों ने साबित किया कि आज खलनायक सिर्फ हीरो का विरोधी नहीं, बल्कि कहानी का इंजन व दर्शकों की जिज्ञासा का केंद्र भी है। हिंदी सिनेमा में आज खलनायक सिर्फ ब्लैक एंड व्हाइट की तरह नैतिक विभाजन नहीं, बल्कि एंटी-हीरो, ग्रे-जोन और क्रिमिनल-सेंट्रिक नैरेटिव का प्रतीक भी बन चुका है। जिसे केजीएफ, पुष्पा, मिर्ज़ापुर, छावा और एनिमल जैसी फिल्मों और 'आश्रम' जैसी वेब सीरीज़ ने और मजबूत किया। ट्रेंड यह कि कहानी अक्सर हिंसक, कानून विरोधी या नैतिक रूप से संदिग्ध किरदार के नज़रिए से कही जा रही है। जबकि, बॉक्स ऑफिस के आंकड़े बताते हैं कि दर्शक इस अंधेरी जगह में रोमांच और रिलेटेबिलिटी दोनों खोज रहे हैं।

इस परिदृश्य में अक्षय खन्ना और बॉबी देओल जैसे कलाकारों ने 'स्टार विलेन' का नया मॉडल भी तैयार किया, जहां निगेटिव रोल करियर रिवाइवल का साधन व अभिनय कौशल आज़माने की प्रयोगशाला भी बना। उनकी सफलता संकेत देती है कि आने वाले सालों में खलनायक की परतदार, मानवीय और कभी-कभी ग्लैमराइज छवि ही मुख्यधारा हिंदी सिनेमा की धुरी रहने वाली है। अक्षय खन्ना का अभिनय संवेदनशीलता और ठंडे करिश्मे का संगम है। 'रेस', 'इत्तेफाक' और 'धुरंधर' जैसे किरदारों में उन्होंने दर्शकों को यह सोचने पर मजबूर किया कि खलनायक हमेशा हिंसक नहीं होता कभी-कभी वह बौद्धिक रूप से खतरनाक होता है। वह सिनेमा के 'मॉडर्न विलेन' हैं स्टाइलिश, विचारवान और रहस्यमय।

दूसरी ओर, बॉबी देओल ने 'मौन के आतंक' को साकार किया। 'आश्रम' में बाबा निराला और 'एनिमल' में उनका खामोश खलनायक दर्शकों के भीतर भय और आकर्षण दोनों पैदा करता है। इन किरदारों का विरोधाभास यह है कि वे बुरे हैं, पर मनुष्य भी हैं, टूटी हुई आत्माएं भी हैं, जो हिंसा में अपने अस्तित्व की तलाश करती हैं। फिल्मों में अक्षय खन्ना का सफर 'हमराज़', 'रेस' से शुरू होकर 'छावा' के औरंगजेब और 'धुरंधर' के रहमान डकैत तक पहुंच गया, जहां वे निगेटिव स्पेस को अपनी जगह बना चुके हैं। उनके भारी और नियंत्रित संवाद, धीमी लेकिन भय पैदा करने वाली बॉडी लैंग्वेज और आंखों में ठंडापन उन्हें 70-80 के विलेन से अलग, मनोवैज्ञानिक खलनायक बनाता हैं। 'धुरंधर' में रहमान डकैत के रूप में चर्चा हीरो से ज्यादा उनके किरदार की हो रही। उनकी हॉलीवुड के प्रतिष्ठित विलेन कैरेक्टरों से तुलना होने लगी। 'छावा' में औरंगजेब की भूमिका के साथ उन्होंने इतिहास आधारित निगेटिव किरदार में भी परतें जोड़ते हुए दिखाया कि दर्शक खलनायक में भी वैचारिक और भावनात्मक जटिलता देखना चाहता है।

रोमांटिक हीरो बॉबी देओल का 'विलेन युग' वेब सीरीज 'आश्रम' के बाबा निराला से शुरू होकर फिल्म 'एनिमल' के मूक, लेकिन हिंसक अबरार हक तक आता है। इस किरदार ने उन्हें फिर से मुख्यधारा चर्चा में ला खड़ा किया। 'आश्रम' में उन्होंने तथाकथित धर्मगुरु के रूप में जिस तरह सत्ता, शोषण और करिश्मे का मेल दिखाया, उसने यह साबित किया कि निगेटिव रोल, स्टार की खोई हुई चमक फिर लौटा सकते हैं। 'एनिमल' में अबरार जैसे लगभग बिना

संवाद वाले किरदार में सिर्फ शरीर, आंखों और हिंसा की कोरियोग्राफी के जरिए प्रभाव छोड़ना, आधुनिक एक्शन-सिनेमा के सौंदर्यशास्त्र के अनुरूप एक नया तरह का खलनायक गढ़ता है, जो स्टाइल और क्रूरता दोनों से याद रहता है। इसके बाद उन्हें रेस-3, लव हॉस्टल और आगामी बड़े प्रोजेक्ट्स में कास्ट किया जाना दिखाता है कि इंडस्ट्री उन्हें नए दौर के विलेन के रूप में देख रही है।

हिंदी सिनेमा के कथानक में 'नायक' हमेशा केंद्र में रहा है। वह पात्र जो अच्छाई, त्याग और नैतिकता का प्रतीक होता है। लेकिन नायक की रोशनी तभी चमकती है, जब उसके सामने एक दमदार खलनायक हो। हर दौर में कुछ ऐसे कलाकार हुए, जिन्होंने यह साबित किया कि अभिनय की असली गहराई 'बुराई' को विश्वसनीय और करिश्माई बनाने में है। उनके किरदारों ने यह दिखाया कि दर्शक नफ़रत करते हुए भी ऐसे पात्रों को भूल नहीं पाते। 1930 और 40 के दशक का हिंदी सिनेमा अच्छाई-बुराई की सीधी लड़ाइयों पर आधारित था। बाद में कुछ अभिनेताओं ने खलनायकी का चेहरा बदलना शुरू किया। इसकी शुरुआत केएन सिंह ने की। जब निगेटिव किरदार बल या हिंसा आधारित थे, तब उन्होंने सोचने-वाले अपराधी की छवि रची। केएन सिंह ने 'कैदी', 'जीवन नैया' और 'हवस' जैसी फिल्मों में संतुलित, ठंडा और परिष्कृत अंदाज दर्शाया।

इसके बाद आया प्राण का दौर, जिन्होंने 1940 और 50 के दशक में खलनायक की परिभाषा ही बदल दी। 'परख', 'जहां आरा' और 'बड़ी बहन' जैसी फिल्मों में उनका अभिनय डरावना और सम्मोहक दोनों था। वे बुरे अवश्य थे, पर करिश्माई ढंग से। उनके अंदाज़, आवाज और चाल-ढाल में एक खास चमक थी, जिसने खलनायकी को एक नई प्रतिष्ठा दी। प्राण जितना नफरत का पात्र बने, उतने ही दर्शकों के मन में गहराई से बस गए और यही सिनेमा का विरोधाभास है। अजीत ने इस धारा को और स्टाइलिश बनाया। 1950-60 के दशक में उनकी छवि एक ऐसे 'गैंगस्टर जेंटलमैन' की बन गई, जिसकी बोली और चाल से ही डर बैठ जाए। उनके संवाद और रौबदार उपस्थिति ने साबित किया कि खलनायक भी 'क्लास' रख सकता है। अजीत की खलनायकी में ग्लैमर था। लेकिन, प्रेम चोपड़ा, रंजीत और गुलशन ग्रोवर की आंखों से अय्याशी टपकती थी, जो उनकी खलनायकी पहचान बनी।

इसी दौर में 1975 में 'शोले' आई और गब्बर सिंह ने यह साबित किया कि खलनायक भी नायक बन सकता है। अमजद खान का किरदार गब्बर बहुत प्रभावशाली था। उसकी खासियत थी 'संवाद में आतंक' पैदा करना। गब्बर सिंह बने अमजद खान ने बाद में कई सकारात्मक भूमिकाएं निभाईं। हालांकि 'लावारिस', 'योगी' और 'धर्म कांटा' जैसी फिल्मों में वे खलनायक थे, लेकिन दर्शक उन्हें गब्बर के रूप में याद करते हैं। इस परंपरा को अमरीश पुरी ने भी खासी ऊंचाई दी। 'मिस्टर इंडिया' के मोगैंबो से लेकर 'परदेस' या 'नायक' तक, उनके किरदार ताकत और भय का प्रतीक बने। उनकी गूंजती आवाज़ और सख्त उपस्थिति ने खलनायक को ऑरा दिया। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' में उन्होंने वही रौब एक बदले हुए भाव में दिखाया, जहां बुराई के पीछे मानवीय भावनाएं थीं।

हर युग का खलनायक उस समय के समाज का भावात्मक आईना होता है। '50-60 में वह सत्ता और संपत्ति के भ्रष्ट प्रतीक थे। '70ङ्क80 में वह व्यवस्था-विरोधी आम आदमी का गुस्सा बन गया। 2000 के बाद उसने मानवीय अंतर्विरोधों का चेहरा धारण कर लिया। अभिनेता के लिए यह किरदार सबसे कठिन काम है। यही खलनायकी की कसौटी भी है। केएन सिंह की बौद्धिकता, प्राण की अदाओं का आतंक, अजीत की ठसक, अमजद खान की संवाद अवधारणा, अमरीश पुरी का रौब, अक्षय खन्ना की बुद्धिमत्ता और बॉबी देओल की भावनात्मक ठंडक ये सब मिलकर दिखाते हैं कि हिंदी सिनेमा की सबसे गहरी यादें खलनायकों की बदौलत ही बनीं। आज जब सिनेमा 'यथार्थ' की ओर लौट रहा है, तब भी दर्शक खलनायक की तलाश करता है। वह कहानी को गहराई देता है। केएन सिंह से लेकर बॉबी देओल और अक्षय खन्ना तक, इन कलाकारों ने दिखाया कि अभिनय की असली ऊंचाई नायकत्व में नहीं, बल्कि खलनायकी की परतों में छिपी होती है जहां नफ़रत और करुणा, दोनों का स्वर एक साथ गूंजता है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फिल्मी धागे की डोर कितनी मजबूत, कितनी कमजोर

अशोक जोशी

प्रेम का रिश्ता बहुत नाजुक होता है, इसे गुस्से या जल्दबाज़ी में कभी नहीं तोड़ना चाहिए। क्योंकि, यदि यह एक बार टूट जाए तो इसे दोबारा जोड़ना मुश्किल होता है और अगर जुड़ भी जाए तो उसमें गांठ पड़ जाती है, जिससे पहले जैसा प्रेम नहीं

रहता। हमारे जीवन को बांधे रखने वाली सांस को भी डोर की ही संज्ञा दी गई है। और इसके बारे में भी कहा गया है जीवन की डोर बड़ी कमजोर। एक डोर वह भी है जो पतंग को आसमानी ऊंचाई पर पहुंचाने का काम करती है। इन दिनों पतंग की यही डोर इंसानों को भी ऊपर पहुंचाने में लगी हुई है। मजे की बात तो यह है कि हिन्दी फिल्मों भी इस डोर या धागे का कई बार प्रयोग किया गया है।

ऐसी कई फिल्में हैं जिनके शीर्षक में धागे या डोर का प्रयोग किया गया है। यह बात अलग है कि यह शीर्षक केवल नाम के ही होते हैं। मूल कहानी से उनका कोई लेना देना नहीं होता है। कई बार तो इसका अर्थ फिल्म की कहानी से उल्टा ही होता है। 1973 में राज खोसला ने एक फिल्म बनाई थी 'कच्चे धागे।' कबीर बेदी और विनोद खन्ना के अभिनय से सजी इस फिल्म में धागों का यह संबंध उतना कच्चा नहीं था जितनी मजबूत दोनों डाकू बने पात्रों की दुश्मनी। फिल्म में कच्चे धागे का सिर्फ इतना ही लेना देना था कि फिल्म की नायिका मौसमी चटर्जी दोनों डाकुओं को अलग अलग अपना भाई मानती है और इसी बहन के प्रेमी को मिलाने के लिए दोनों डाकू नफरत की जंजीर को तोड़ कर एक साथ हो जाते है। बस इसके अलावा पूरी फिल्म में मारपीट और हिंसा ही दिखाई गई थी।

इसके 26 बरस बाद उनके मिलन लुथरिया ने इसी शीर्षक से फिल्म बनाई थी। इसमें अजय देवगन, सैफ अली खान को सौतेला भाई और एक दूसरे का दुश्मन बताया गया है। इसमे बहन वाला कोई कच्चा धागा नहीं था। फिल्म की नायिकाओं में नम्रता शिरोडकर और मनीषा कोइराला ने साथ दिया था। इसमें अजय एक तस्कर की भूमिका में हैं, जो राजस्थान-पाकिस्तान की सीमा पर तस्करी करता है। फिल्म का फिल्मांकन राजस्थान के मरुस्थल क्षेत्रों और स्विट्जरलैंड में हुई हैं। इसमें कच्चे धागे वाली कोई फिल्मी कहानी तो नहीं थी। लेकिन पहली फिल्म कच्चे धागे और दूसरी फिल्म कच्चे धागे के निर्देशकों राज खोसला और मिलन लुथरिया के बीच कच्चे धागे जैसा संबंध था। मिलन लुथरिया को

राज खोसला का जैविक पुत्र माना जाता है जिसका जन्म कभी राज खोसला के सहायक रहे महेश भट्ट की बहन और राज खोसला के विवाहोत्तर संबंध के बाद हुआ था और अर्जुन लुथरिया ने मां बेटे को अपनाकर अपना नाम दिया था।

इसी तरह 1974 में एक फिल्म आयी थी 'रेशम की डोरी' जिसमें इसमें रेशम की डोरी धर्मेंद्र और उनकी बहन बनी कुमुद छुगानी के बीच केवल एक गाने और कुछ दृश्यों तक ही बंधी रहीं। पूरी फिल्म में धर्मेंद्र सायरा बानो को प्रेम की डोरी से बांधते दिखाई दिए। इस लिहाज से फिल्म का नाम प्यार की डोरी भी होता तो कोई फर्क नहीं पड़ता। संयोग से यह फिल्म राज खोसला के गुरु रहे निर्माता निर्देशक गुरुदत्त के साथ कच्चे धागे से बंधे उनके भाई आत्माराम ने बनाई थी। फिल्मी शीर्षकों के अलावा फिल्मी गानों में डोरी या धागो का प्रयोग देखने को मिलता है। लेकिन गीतकार यहां रेशम की डोरी या कच्चे बंधन को भाई बहन तक ही सीमित नहीं मानते। वह तो प्रेमी और

प्रेमिकाओ को भी कच्चे धागे या रेशम की डोरी से बांधने में नहीं चूके हैं।

मनोज कुमार और आशा पारेख की फिल्म साजन में आनंद बक्षी ने 'रेशम की डोरी' की तुकबंदी कहां जइयो निंदिया चुरा के चोरी चोरी से की है। जितेंद्र और नंदा की फिल्म धरती कहे पुकार

में मजरूह सुल्तानपुरी ने नायक और नायिका को प्रेम की डोरी में बांधते हुए जो गीत जे हम तुम चोरी से बंधे इक डोरी से लिखा था, उसकी डोर से दर्शक इतने तीव्रता से बंधे थे कि देश के कई सिनेमाघरों में दर्शक रील को रिवाइंड करवाकर यह गाना बार बार सुनते रहे। इंदौर के अलका टॉकीज में तो यह आलम था कि कॉलेज के छात्र जबरन टॉकीज में घुसकर इस गाने को सुनकर ही दम लेते थे।

देव आनंद और सचिन देव बर्मन को भी इस धागे और डोरी से बहुत ज्यादा लगाव था। उनकी फिल्म यह गुलिस्तां हमारा में एक गीत था गोरी गोरी गोरी रे किस लिए बुन रही डोरी रे। इसी के अंतरे में नायक कहता है कच्चे है तेरे ये रेशम के धागे तोड़कर कोई इसे कोई कैसे भागे। देव आनंद की अपनी फिल्म 'हरे राम हरे कृष्ण' में भी कांची रे कांची रे प्रीत मेरी सांची में गीतकार आनंद बक्षी ने डोरी और कच्चे धागे दोनो का प्रयोग कर लिखा है तेरे हाथों मेरी डोरी ऐसे कच्चे धागे से बंधा आया जैसे। देव आनंद की ही फिल्म 'प्रेम पुजारी' के गीत रंगीला रे में नीरज ने प्यार की डोरी का बहुत सुंदर चित्रण करते हुए लिखा है पलकों के झूले से सपनों की डोरी,प्यार ने बाँधी जो तूने वो तोड़ी।

देव आनंद नीरज और सचिन देव बर्मन की इसी तिकड़ी ने तेरे मेरे सपने के गीत जीवन की बगिया महकेगी के एक अंतरे में इसी कच्चे धागे का प्रयोग कर लिखा है हम और बंधेंगे, हम तुम कुछ और बंधेंगे, होगा कोई बीच, तो हम तुम और बंधेंगे बांधेगा धागा कच्चा, हम तुम तब और बंधेंगे। 'ललकार' के गीत गा लो मुस्कुरा लो जीवन की डोर बड़ी कमजोर लिखा गया है तो 'सती सावित्री' की नायिका अपने पति से दाम्पत्य गांठ का उल्लेख करती हुई गाती है जीवन डोर तुम्ही संग बांधी क्या तोडेंगे इस बंधन को जग के तूफान आंधी!

किसी फिल्म में नायक और नायिका को टेलीफोन की डोर के साथ जुडा दिखाया गया है तो कहीं छत पर नायिका के साथ प्रेम पतंग उडाते दिखाया गया है। फिल्मी गीतो की यह डोर बहुत लम्बी है। लेकिन, जिस तरह से पतंग की डेंजर चायनीज डोर जीवन डोर को काटने के लिए कुख्यात हुई है। बहुत संभव है उससे कोई फिल्मकार प्रेरणा लेकर किसी खलनायक को प्रेमी-प्रेमिका की प्रेम की पतंग को काटने या थ्रिलर फिल्म में किसी मंत्री या नेता या व्यापारी को मारने के लिए चाइनीज डोर के प्रयोग को फिल्माने का दाव आजमाए। इसे आतंकवादी हरकतों से जोडकर भी फिल्मांकित किए जाने की संभावना कम नहीं है।

बदलती वैश्विक व्यवस्था का खतरनाक संकेत

डॉनरो सिद्धांत

ममता कुशवाहा
लेखक शिक्षक हैं।

जिस से आज 'डॉनरो सिद्धांत' कहा जा रहा है, उसका उदय इक्कीसवीं सदी में अमेरिकी शक्ति की प्रकृति और उसकी अभिव्यक्ति में एक गहरे बदलाव का संकेत देता है। उन्नीसवीं सदी के मुनरो सिद्धांत और डोनाल्ड ट्रंप से जुड़ी समकालीन विश्वदृष्टि के संयोग से जन्मा यह सिद्धांत केवल प्रभाव जमाने तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्यक्ष संरक्षकत्व (गार्जियनशिप) की खुली घोषणा करता है। यह ऐसे विश्व की तस्वीर पेश करता है जहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका न केवल उन क्षेत्रों में हस्तक्षेप करने का अधिकार अपने पास मानता है जिन्हें वह रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण समझता है, बल्कि वहाँ की राजनीतिक प्रक्रियाओं, सत्ता परिवर्तन और शासन व्यवस्था की निगरानी को भी अपना वैध दायित्व मानने लगता है। इस संदर्भ में वेनेजुएला मात्र एक लैटिन अमेरिकी संकट नहीं रह जाता, बल्कि वह मंच बन जाता है जहाँ अमेरिकी शक्ति का यह नया और असहज स्वरूप अभ्यास में लाया जा रहा है।

अपने मूल में, डॉनरो सिद्धांत प्रभाव क्षेत्रों (स्फीयर ऑफ़ इन्फ्लुएंस) की अवधारणा को पुनर्जीवित करता है, विशेषकर पश्चिमी गोलार्ध को एक विशिष्ट रणनीतिक क्षेत्र के रूप में स्थापित करते हुए। अंतर यह है कि पहले ऐसे दावे अक्सर कूटनीतिक भाषा और नैतिक तर्कों में लिपटे रहते थे, जबकि आज उनकी अभिव्यक्ति कहीं अधिक प्रत्यक्ष और स्पष्ट है। इन क्षेत्रों में सक्रिय बाहरी शक्तियों को वैध हितधारक के रूप में नहीं, बल्कि घुसपैठियों के रूप में चित्रित किया जाता है। स्थानीय राजनीतिक घटनाक्रमों को अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के चश्मे से देखा जाने लगता है। इस प्रकार घरेलू शासन और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है और हस्तक्षेप को दबाव या प्रभुत्व के रूप में नहीं, बल्कि आत्मरक्षा की अनिवार्यता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इस सिद्धांत की एक प्रमुख विशेषता उन मुद्दों का 'सुरक्षाकरण' है, जिन्हें पहले सामाजिक, आर्थिक या विकासात्मक समस्याओं के रूप में देखा जाता था। प्रवासन, मादक पदार्थों की तस्करी, संगठित अपराध और ऊर्जा अस्थिरता अब सहयोग और साझा समाधान की माँग करने वाले अंतरराष्ट्रीय प्रश्न नहीं रह जाते, बल्कि उन्हें सीधे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अस्तित्वगत खतरे के रूप में परिभाषित किया जाता है। जब किसी समस्या को इस तरह प्रस्तुत किया जाता है, तो बल प्रयोग, प्रतिबंध और दबाव जैसे कठोर साधनों का उपयोग न केवल आसान हो जाता है, बल्कि उन पर सवाल उठाना भी कठिन हो जाता है। सीमाएँ केवल भौगोलिक रूप से नहीं, बल्कि वैचारिक रूप से भी धुंधली हो जाती हैं और किसी अन्य देश की आंतरिक अस्थिरता को सीधे अमेरिकी मातृभूमि के लिए खतरा बताया जाने लगता है।

डॉनरो सिद्धांत में प्रयुक्त नैतिक भाषा का परिवर्तन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। शीत युद्ध के बाद के दौर में लोकतंत्र की स्थापना और मानवाधिकारों की रक्षा अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप की नैतिक आधारशिला हुआ करती थी। इस नए सिद्धांत में ये आदर्श धीरे-धीरे पीछे छूटते दिखाई देते हैं और उनकी जगह स्थिरता, पूर्वानुमेयता और नियंत्रण जैसे व्यावहारिक लक्ष्य ले लेते हैं। लोकतांत्रिक परिणामों को उनकी अंतर्निहित वैधता के कारण नहीं, बल्कि इस आधार पर महत्व दिया जाता है कि वे रणनीतिक हितों के अनुकूल हैं या नहीं। यह दृष्टिकोण उदार अंतरराष्ट्रीयतावाद के सार्वभौमिक दावों को कमजोर करता है और वैश्विक राजनीति में नैतिकता के चयनात्मक प्रयोग को उजागर करता है।

डॉनरो सिद्धांत के व्यावहारिक क्रियान्वयन के अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इसका सबसे तात्कालिक प्रभाव प्रभाव क्षेत्रों की अवधारणा का सामान्यीकरण है, जिसे लंबे समय से संप्रभु समानता के सिद्धांत के विपरीत माना जाता रहा है। यदि बड़ी शक्तियाँ अपने पड़ोस में विशेष अधिकारों पर जोर देने लगें, तो अंतरराष्ट्रीय कानून की संरचना हर जगह कमजोर होगी। छोटे और मध्यम देश, विशेषकर वे जिनका इतिहास बाहरी हस्तक्षेपों से भरा रहा है, ऐसे सिद्धांतों को कभी भी निष्कलुष या हितकारी नहीं मानेंगे। लैटिन अमेरिका में सैन्य हस्तक्षेप, सत्ता परिवर्तन और आर्थिक दबाव की स्मृतियाँ आज भी जीवित हैं और किसी भी नए संरक्षकत्व को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है।

वैधता का प्रश्न यहाँ केन्द्रीय बन जाता है। बल, प्रतिबंध या राजनीतिक दबाव से आज्ञाकारिता तो हासिल की जा सकती है, लेकिन वास्तविक सहमति शायद ही कभी उत्पन्न होती है। बाहरी समर्थन के माध्यम से वैधता गढ़ने के प्रयास अक्सर उलटे पड़ते हैं और साम्राज्यवाद की धारणा को और मजबूत करते हैं। इससे स्थानीय नेतृत्व की विश्वसनीयता भी कमजोर होती है, जिन्हें विदेशी शक्तियों का प्रतिनिधि समझ लिया जाता है। इसके अतिरिक्त, यदि किसी एक क्षेत्र में बाहरी निगरानी और हस्तक्षेप को स्वीकार्य मान लिया गया, तो अन्य शक्तियों के लिए भी दुनिया के दूसरे हिस्सों में वैसा ही व्यवहार उचित ठहराना आसान हो जाएगा। इस तरह डॉनरो सिद्धांत की तर्कप्रणाली एक ऐसे विखंडित विश्व को जन्म दे सकती है जहाँ साझा नियमों के स्थान पर प्रतिस्पर्धी प्रभुत्व हावी हों।

भारत के लिए ऐसे सिद्धांतों का उभार एक जटिल दुविधा पैदा करता है। संप्रभुता और गैर-हस्तक्षेप भारतीय विदेश नीति के मूल स्तंभ रहे हैं, जो किसी भावुक आदर्शवाद से नहीं, बल्कि औपनिवेशिक अनुभवों से उपजे व्यावहारिक सबकों पर आधारित हैं। भारत की रणनीतिक संस्कृति हमेशा से बाहरी निगरानी में होने वाले सत्ता परिवर्तनों के प्रति सशंकित रही है, क्योंकि इतिहास बताता है कि बाहर से थोपी गई स्थिरता अक्सर दीर्घकालिक स्वायत्तता को कमजोर कर देती है। साथ ही, अमेरिका के साथ भारत की बढ़ती साझेदारी, विशेषकर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी, समुद्री सुरक्षा और एशिया में शक्ति संतुलन जैसे क्षेत्रों में वास्तविक हित-साम्य को भी दर्शाती है।

इस संतुलन को साधने के लिए रणनीतिक परिपक्वता आवश्यक है। साझेदारी का अर्थ यह नहीं हो सकता कि भारत उन सिद्धांतों का बिना आलोचना समर्थन करे, जो उन्हीं मानकों को कमजोर करते हों जिन पर उसकी अपनी सुरक्षा और स्वतंत्रता टिकी है। रणनीतिक स्वायत्तता कोई अमूर्त नारा नहीं, बल्कि उस विश्व में एक अनिवार्य आवश्यकता है जहाँ शक्ति का प्रयोग संवाद से अधिक दबाव के माध्यम से होने लगा है। इसलिए भारत को अमेरिका के साथ सहयोग करते हुए भी स्वतंत्र विवेक बनाए रखना होगा, जहाँ हित मेल खाते हों वहाँ साथ चलना, और जहाँ सिद्धांतों पर आंच आती हो वहाँ संयमित असहमति प्रकट करना।

डॉनरो सिद्धांत वैश्विक राजनीति में भूमिका और पहचान से जुड़े गहरे प्रश्न भी उठाता है। एक उभरती महाशक्ति और वैश्विक दक्षिण की प्रमुख आवाज़ के रूप में भारत को यह तय करना होगा कि वह शक्ति और सिद्धांत के इस द्वंद्व में किस ओर खड़ा होगा। चुनौती यह है कि संप्रभुता और समानता की रक्षा करते हुए नैतिक उपदेशक बनने से बचा जाए, और राष्ट्रीय हित साधते हुए अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के प्रति उदासीनता न दिखाई जाए।

डॉनरो सिद्धांत एक ऐसे खतरनाक नए विश्व का प्रतीक है जहाँ शक्ति अधिक स्पष्ट और मानदंड कम प्रभावी हो गए हैं। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में मौन हमेशा कमजोरी का संकेत नहीं होता; कभी-कभी वह संतुलन और विवेक की रणनीति भी हो सकता है। लेकिन संयम का अर्थ निष्क्रियता नहीं होना चाहिए। बहुपक्षवाद, संप्रभुता के सम्मान और संरक्षकत्व की दीर्घकालिक लागतों पर शांत किंतु दृढ़ पुनर्स्मरण आवश्यक है। इस अस्थिर वैश्विक परिदृश्य में शक्ति और सिद्धांत, साझेदारी और स्वायत्तता के बीच संतुलन बनाए रखना शायद सबसे कठिन, लेकिन सबसे आवश्यक कार्य है।

बेबस गंगा: अपने हाथों ही हम अपनी गंगा गंवा रहे

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

दि न- 10 जनवरी, 2026। सायं 6.15, स्थान, बनारस और गंगा आरती।

यूँ अब साल में दो बार बनारस जाती हूँ और आपके समक्ष गुणगान गाती हूँ। बनारस है ही अभिभूत और मंत्रमुग्ध करने वाला शहर और गंगा आरती अद्भुत, मोहित करने वाला पल। हम भी डीज़ल बोट से (प्रदूषित करने हम भी भागीदार थे, चप्पू से खेनेवाली नावें जो नहीं मिली) गंगा आरती देखने चल पड़े। अचानक से दायें, बायें से ढ़ेरों स्टीमर, छोटे क्रूज बोट्स काला धुँआ उड़ाते हज़ारों की संख्या में जाने कहाँ से उमड़ पड़े। हम काले, दम घोंटू धुयें में घिर गये। वैसे ही सर्दी थी। लोग अचानक खांसने लगे। हमने केवट से वापस चलने को कहा। लोग घाटों पर सर्दी भगाने के लिये, मुर्दे के भस्म होने के लिये अग्नि प्रज्जवलित कर रहे। दीप आरती से पहले लोबान आरती हुई जो धुँआ-धुँआ थी। ड्रोन आकाश में मंडरा रहे थे। व्यवस्था की जाने कौन सी तस्वीर पहुँचा रहे थे? मायूस काली तस्वीरों को लिये हम अधूरी आरती से लौट चले। 30 साल से मेरे हृदय में बसी गंगा आरती की खुशबू डीज़ल से भर गई।

घाटों की बीच आरती की लड़ाई चल रही
गंगा आरती की व्यवस्था बदल रही
वो चित्रकार कहाँ गया
जिसने गंगा के ऊपर नीला आसमाँ रचा था
उसकी बोतल में अब काला पेंट किसने भरा
शायद चित्रकार भी मजबूर हो चला
फिर भी पूछ आई गंगा से
और क्या की रही है ज़िंदगी
गंगा बदस्तूर बहती रही।

गंगा हुई मलिन

नील गगन श्याम हुआ
सारा मंज़र धुआँ धुआँ
श्वेत पानी सियाह हुआ
प्रदूषण ने गंगा को छुआ
किसने माँ की आंखों में कालिख मली
शर्मिंदा हो ऐ भागीरथी कहाँ चली ?
स्टीमर, बोट्स दानव की तरह
घुसे आ रहे संझा आरती में
दमघोंटू पवन, जलते नयन
ज़हर फैला रहे संझा आरती में
जो वो थी कितने नाज़ों की पली
यूँ शिव प्रिया अकेली हुई
लो बनारस में ही गंगा हुगली हुई
कहती, रोको मत, यहाँ अब मुझे लली
शर्मिंदा हो ऐ भोगवती कहाँ चली
काशी की शान, ये गंगा तट महान
''नमामि गंगे'' से भी मुसीबत ना टली

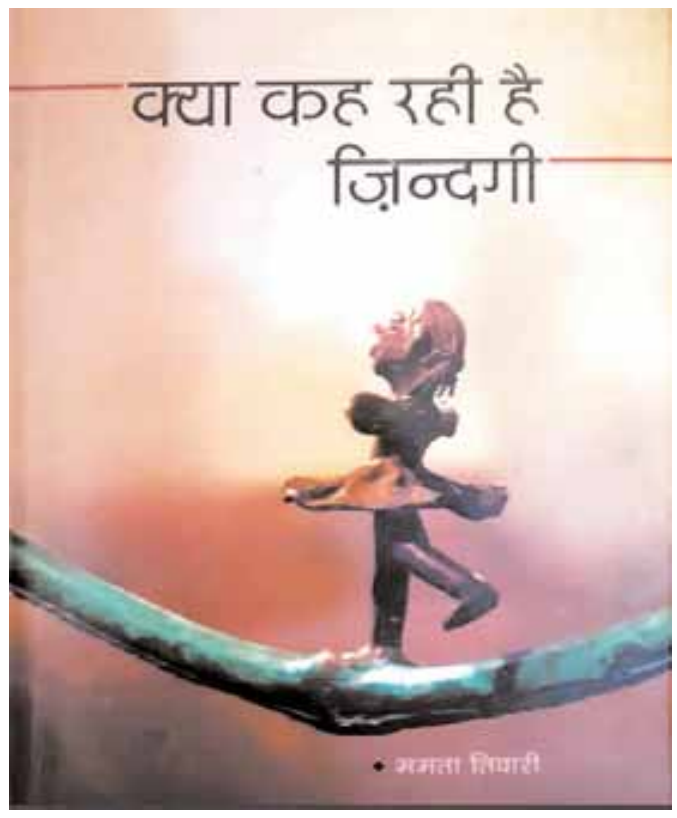

शर्मिंदा हो ऐ पद्मा कहाँ चली
गंगा आरती को धूसरित किया
सुविधा पाने को प्रदूषित किया
गंगा का धवल श्वेत वस्त्र
बनारस के धुयें ने कलंकित किया
संताप से उसकी कोरी चुनरी जली
शर्मिंदा हो ऐ मालती कहाँ चली?
शिव जटा से प्रारंभ फनिल गंगा
पाप लोगों के दिल में छुपाये
तमाम क्लेश हृदय में समेटे
हलाहल पी शिव शंकर हो चली
स्वच्छता से कहीं कचरा हुआ बली
शर्मिंदा हो ऐ त्रिदशेश्वरी कहाँ चली ?
छोड़ दिया भी अब
गंगा में डुबकी लगाना
प्रण किया सीवेज पानी को
''पापहन्त्री'' में मिलने से बचाना
लगती नहीं उसे अब बनारस की गलियाँ
भली
शर्मिंदा हो हे नलिनी कहाँ चली?
''मलाइयो मिश्री'' का अद्भुत स्वाद
देवनदी को मीठा ना बना रहा
तमाम ख़ामियों के चलते, फिर भी
गंगा का दिल अथाह बड़ा रहा
गंदगी समेटे लहरों में वो चली
शर्मिंदा हो ऐ नंदिनी कहाँ चली?
जो हुआ उसमें हमारी भूल है
देश विदेश में गंगा की मचती धूम है
विदेशियों को कड़वा धुँआ बीमार कर चला
विश्व की नज़रों में अभिमान गिर चला
यूँ मानचित्र में हमारी सुसंस्कृत छवि ढली
शर्मिंदा हो ऐगेंजेस कहाँ चली ?
अथाह जनसमूह आरती में उमड़ा आ रहा
त्रिपथगामिनी के सीने पे कौन बुलडोजर चला रहा
पहले ही हमारे पापों से छलनी था हृदय
अब ये प्रदूषण उसे भयावह बना रहा
मानों मसल दी किसी ने नाजुक कली
शर्मिंदा हो ऐ स्वर्ण दी कहाँ चली ?
''बचा लो मुझे''
आहवान माँ गंगा का है
कीटाणु रहित पूजा योग्य
अमृतजल गंगा का है
नहीं व्यवस्था की झूठी बातें भली
शर्मिंदा हो ऐ विष्णुपदी कहाँ चली ?
जो दे रही माँ पवित्र जल
उसी की कोख में ज़हर मिला रहे
अपने हाथों ही हम
अपनी गंगा गंवा रहे
यही फुसफुसाहट है बनारस की गली गली
शर्मिंदा हो ऐ जान्हवी कहाँ चली?
गंदगी समेटे लहरों में
बेबस गंगा कराह रही
कहती बदलो अपना रवैया
अन्यथा मैं यहाँ से जा रही
इस बार लगी मुझे उदास गंगा ढली ढली
शर्मिंदा हो ऐ मंदाकिनी कहाँ चली ?
शर्मिंदा हो ऐ गंगा कहाँ चली ?

फोटो: तन्वी मंडलोई अहमदाबाद

दुनिया की बेरहमी को भेदती कोशिश... !

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

इस फिल्म की रिव्यू लगभग नामुमकिन है। गजा में पिछले नरसंहार के प्रोपेगैंडा और गलत जानकारी से भरी दुनिया में कौथर बेन हानिया की फिल्म पूरी ईमानदारी से बात करती है। विषय अलग भी रखें तो यह फिल्म असल घटनाओं को सिनेमाई नजरिए से दिखाने का कमाल है, दिल पर असर करती है कि देखना जरूरी है।

'द वॉइस ऑफ हिंद रजब' में छोटी-सी आवाज है, जो अकेली और खतरे में छोटी लड़की की है, डर और घबराहट से उसकी सांस तेज और फूली हैं, लेकिन यह फिल्म में साफ सुनाई देती है, क्योंकि आसपास की बेचैन आवाजों के बीच इसे गाया नहीं है। यह रजब के कहे आखिरी शब्दों की असल जिंदगी की रिकॉर्डिंग है, जो पांच साल की फलस्तीनी बच्ची थी और 29 जनवरी, 2024 को मारी गई थी, जब उसके परिवार की कार पर इजराइली सेना ने गजा पट्टी पर गोलाबारी की थी। आखिरी घंटों में लड़की ने बार-बार फोन किया और बचाव के लिए गुहार लगाई, जो कभी उस तक नहीं पहुंची।

गजा पर इजराइली बमबारी के दो बरसों में बीस हजार से ज्यादा फलस्तीनी बच्चे मारे गए। दस अक्टूबर को सीजफायर के बाद से बयासी और बच्चे मारे गए हैं। मरने वालों की तस्वीरें ऑनलाइन हैं। हिंद की तस्वीरें भी शामिल हैं, जिसमें वह गुलाबी रंग के कपड़े, फूलों वाला टियारा पहने या बड़ी एकेडमिक कैप और गाउन में मुस्कुराती दिखाई देती हैं, लेकिन उनकी आवाज, मौत के बाद भी परेशान करती है। जब बेन हानिया ने हिंद की आवाज सुनी तो एयरपोर्ट टर्मिनल पर अचानक रुक गईं, क्योंकि यात्री उसके चारों ओर जमा हो गए थे। यह बच्ची थी, जो फलस्तीन को नरसंहार से बचाने की अपील के बीच बड़ों से अपील कर रही थी और दोनों ही मामलों में दुनिया नाकाम रही थी। वे कहती हैं, 'जब मैंने उसकी आवाज सुनी तो उस पल ऐसा लगा जैसे मुझसे

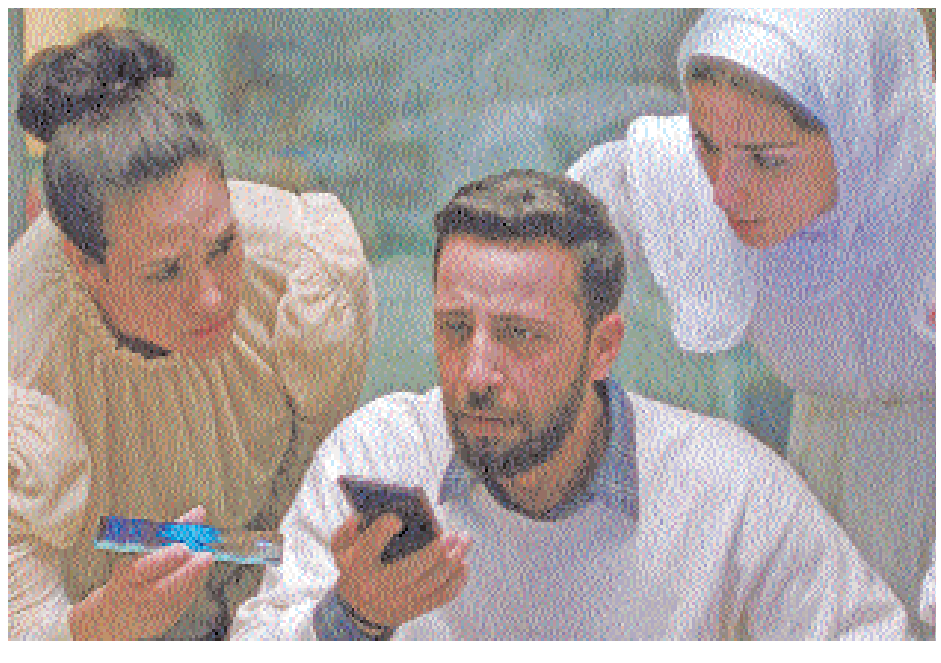

कह रही हो।'

आखिरी मिनटों में बेन हानिया ने हिंद की मां का इंटरव्यू शामिल किया है। यहां मरी लड़की की आवाज का इस्तेमाल असरदार रहा है। **'द वॉइस ऑफ हिंद रजब'** बहुत दर्दनाक है। फिल्म की कहानी इतनी भयानक है कि उसका सामना करना मुश्किल है, फिर भी हमें इसका गवाह बनने की मांग करते हैं।

फिल्म को वेनिस फिल्म फेस्टिवल ने चुना, जहां सितंबर 2025 में इसका प्रीमियर हुआ। इसे तेइस मिनट तक तालियां मिलीं, जो फेस्टिवल के इतिहास में सबसे लंबा था। यह और लंबा चल सकता था, लेकिन अगली फिल्म दिखाने के लिए सिनेमाघर को खाली करना पड़ा। बेन हानिया को अहसास हुआ कि दुनिया भर में फैली बेपरवाही को भेदने में कामयाब रही हैं।

कहती हैं- 'इतने बच्चे मारे गए हैं कि हम भूलने की बीमारी और सुन्न हुए जा रहे हैं। सिनेमा, साहित्य और कला चीजें बदल सकते हैं। एक समय ऐसा आता है, जब आप समझाना बंद कर देते हैं। अब यह महसूस करने की बात है कि किसी और की जगह पर होना कैसा होता है। यह अलग लेवल है और सिनेमा यह कर सकता है।'